

झारखंडगजट

असाधारण अंक

झारखंड सरकार द्वारा प्रकाशित

संख्या 312 राँची, सोमवार,
26 वैशाख, 1938 (श०)
16 मई, 2016 (ई०)

विध (वधान)
वभाग।

अधिसूचना

13 मई, 2016

संख्या-एल0जी0-09/2016-84/लेज0--झारखंड वधान मंडल कानूननिलय अधिनियम, वजस पर
रायपाल नदनांक 06 मई, 2016 को अनुमित दे चुके ह, इसके द्वारा सवसाधारण क सूचना के लिये प्रकाशित
कया जाता है।

प्रान इंटरनेशनल वववलय अधिनियम, 2016

(झारखंड अधिनियम संख्या-11, 2016)

प्रस्तावना

झारखंड राय म प्रान इंटरनेशनल वववलय क स्थापना एवं समावेश के लिए और उससे
संब

एक निजी वववलय के आनुषंगिक मामल क धित प्रदान करने हेतु एक अधिनियम;

2

झारखंडगजट(असाधारण)सोमवार, 16 मई, 2016

जबकि यह सम्योचित है कि भारतीय ँयास अधिनियम, 1982 के तहत गठित और भारतीय
पंजीयन

अधिनियम, 1908 के तहत पंजीकृत (ंयास) प्रान फाउंडेशन 40/2, उपचुद मुखज लेन, कोलकाता
700025, द्वारा

प्रयोक्त प्रान इंटरनेशनल वववलय, राँची, झारखंड क स्थापना तथा समावेशन और उसके
अनुप निजी

वववलय का दजा प्रदान करने हेतु और उससे संब आनुषंगिक मामल के संदभ म आवश्यक है।

एतद्वारा भारतीय गणराय के सइसठव वष म झारखंड वधान-सभा द्वारा निनिलय
प म

अधिनियमत कया जाता है:

प्रारंभिक

1. संक्षु नाम, ववतार एवं प्रारंभ:-

- 1) यह अधिनियम "महान इंटरनेशनल वॉल्वेफालय अधिनियम, 2016" कहा जाएगा।
- 2) इसका वॉल्वेफालय संपूर्ण झारखंड राज्य में होगा।
- 3) यह उस तिथि से प्रवृत्त होगा जैसा ठीक राज्य सरकार द्वारा शासक राजपट्ट में अधिसूचना जारी कर नियत ठीकया जाय।

2. परिभाषा:-

अगर इस अधिनियम के संदर्भ में अपेक्षित/आवश्यक हो:

- a) 'अकादमिक परिषद्' का अर्थ है वॉल्वेफालय का अकादमिक परिषद् जैसा ठीक अधिनियम का धारा-24 में वर्णित है;
- b) 'वांछक प्रतिवेदन' का आशय है वॉल्वेफालय का वांछक प्रतिवेदन जैसा अधिनियम का धारा- 39 में संदिग्ध है;
- c) 'प्रबंधन बोर्ड' का अर्थ है, इस अधिनियम का धारा-23 के तहत गठित वॉल्वेफालय का प्रबंधन बोर्ड;
- d) 'परिसर' का आशय है वॉल्वेफालय का क्षेत्रफल जहाँ यह अवस्थित है;
- e) 'कुलाधिपति' से आशय है वॉल्वेफालय के कुलाधिपति, जो इस अधिनियम का धारा- 12 के अधीन नियुक्त है;
- f) 'मुख्य वॉल्वेफालय एवं लेखा पदाधिकारी' का अर्थ है वॉल्वेफालय के मुख्य वॉल्वेफालय एवं लेखा पदाधिकारी जो अधिनियम का धारा-18 के अधीन नियुक्त है;
झारखंड गजट (असाधारण) सोमवार, 16 मई, 2016
- g) 'परिष्कार नियंत्रक' का अर्थ है वॉल्वेफालय के परिष्कार नियंत्रक, वॉल्वेफालय अधिनियम का धारा-19 के अधीन हुई हो;
- h) 'अंगीभूत महावॉल्वेफालय' से आशय है वैसे महावॉल्वेफालय अथवा संस्थान जो वॉल्वेफालय द्वारा संपोषित है;
- i) 'कमचार' से आशय है वॉल्वेफालय द्वारा नियुक्त कमचार; इसके अंतर्गत वॉल्वेफालय एवं अंगीभूत महावॉल्वेफालय के शिक्षक एवं अन्य कमचार भी समाहित हैं;
- j) 'स्थायी निधि' का अर्थ है वॉल्वेफालय का स्थायी निधि वॉल्वेफालय अधिनियम का धारा-37 के तहत हुई हो;
- k) 'संकाय' से आशय है समान अनुशासन के अकादमिक वॉल्वेफालय;
- l) 'शुद्ध' का आशय है वॉल्वेफालय द्वारा वॉल्वेफालय से उगाह गयी राशि, जो ठीकसी पाठ्यक्रम तथा उससे संबंधित हो;
- m) 'सामान्य निधि' से आशय है वॉल्वेफालय का सामान्य निधि, वॉल्वेफालय अधिनियम का धारा-38 के अंतर्गत हुई हो;
- n) 'शासी निकाय' का अर्थ है वॉल्वेफालय का शासी निकाय, वॉल्वेफालय अधिनियम का धारा-22 के तहत हुआ हो;
- o) 'राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रमाणन परिषद्' से आशय है राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रमाणन परिषद्, बंगलुरु, वॉल्वेफालय अनुदान आयोग का एक वॉल्वेफालय संस्था;

- p) 'वॉहत'/'नियत' का अर्थ है इस अधिनियम के तहत वॉहत/नियत परिनियम औरिनयमावली;
- q) 'मित-कुलपित' का अर्थ है वॉवॉलालय के मित कुलपित, जनक नियोओ अधिनियमकधारा-15 के तहत हुई हो;
- r) 'कुलसिचव' का अर्थ है वॉवॉलालय के कुलसिचव, जनक नियोओ अधिनियम कधारा-17 के तहत हुई हो;
- s) 'नियंणी निकाय' का आशय है भारत सरकार द्वारा उच्च शिक्षा के अकादमिक स्तर के सुनियोजन हेतु मानक एवं शत के निधारण के लिए स्थापित निकाय, यथा-वॉवॉलालय अनुदान आयोग, अखिल भारतीय तकनीक शिक्षा परिषद, राष्ट्रीय शिक्षा परिषद, भारतीय चिकित्सा परिषद, बार काउंसिल ऑफ इंडिया, फार्मसी काउंसिल ऑफ इंडिया, राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं मूल्यायन परिषद, भारतीय निसर्ग परिषद, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, वैज्ञानिक एवं औद्योगिक शोध परिषद

4

झारखंड गजट (असाधारण) सोमवार, 16 मई, 2016

आओद तथा इसके अलावा सरकार अथवा कोई वैसा निकाय, जो भारत सरकार या राज्य सरकार द्वारा गठित किया गया हो;

- t) 'नियमावली' से आशय है इस अधिनियम के अंतर्गत निम्न नियमावली;
- u) 'अनुसूची' का अर्थ है इस अधिनियम के तहत संलग्न अनुसूची;
- v) वॉवॉलालय से संबंधित 'भवतक निकाय' का अर्थ है:-
 i) सोसाइटीज रजिस्ट्रेशन ऐक्ट, 1860 के अंतर्गत कोई संस्था, अथवा
 ii) इंडियन ऐक्ट ऐक्ट, 1882 के अधीन पंजीकृत कोई लोक उपास, अथवा
 iii) ओकसी राज्य का विध के अनुप पंजीकृत कोई संस्था या उपास।
- w) 'राज्य सरकार' से आशय है झारखंड का राज्य सरकार;
- x) 'परिनियम' 'अपवाद' और 'विनियम' का समूह: आशय है, परिनियम, अपवाद और विनियम जो इस अधिनियम के अंतर्गत वॉवॉलालय द्वारा निम्नित हूँ;
- y) 'वॉवॉलालय के वॉवॉल' का अर्थ है वॉवॉलालय में उपाधि, ओडोलोमा अथवा वॉवॉलालय द्वारा स्थापित अपेक्षा अकादमिक विशिष्टता प्राप्त करने हेतु एकपाठ्यक्रम में नामांकित व्यक्त, जनसम शोध-उपाधि भी शामिल है;
- z) 'शिक्षक' से आशय है प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर, असिस्टेंट प्रोफेसर अथवा इस तरह के अपेक्षा व्यक्त, जनक नियोओ वॉवॉलालय या ओकसी अंगीभूत महाविद्यालय या संस्था में नियुक्त करने (शिक्षण) अथवा शोधकार्य संचालन हेतु हुई हो, इसके तहत अंगीभूत महाविद्यालय अथवा संस्थान के प्रधानाचार्य भी सम्मिलित हूँ, जनक नियोओ वॉवॉलालय अनुदान आयोग द्वारा निधारित नियम के अंतर्गत हुई हो;

aa)

'वॉवॉलालय अनुदान आयोग' से आशय है वॉवॉलालय अनुदान आयोग अधिनियम, 1956 के अधीन स्थापित वॉवॉलालय अनुदान आयोग;

ab)

'वॉवॉलालय' का अर्थ है इस अधिनियम के अंतर्गत झारखंड में स्थापित

महान

इंटरनेशनल वॉवॉलालय;

ac) 'कुलपित' से आशय है ऽवयव्हालय के कुलपित, ऽजनकऽ िनयुऽऽ इस अधिनयम कऽ

धारा-13के तहत हुई हो;

ad) 'ऽवज्जटर'/'अतिथ'/'आगंतुक' से आशय है ऽवयव्हालय के ऽवज्जटर/अतिथ/आगंतुक

यथा इस अधिनयम कऽधारा-10मऽ वज्जत है।

झारखंडगजट(असाधारण) सोमवार,16मई,2016

5

3. ऽवयव्हालय कऽ ंथापना:-

- (1) ऽवयव्हालय कऽ ंथापना **झऽान इंटरनेशनल ऽवयव्हालय**के नाम से होगी।
- (2) ऽवयव्हालय का मुख्यालय झारखंड राँय के अऽतगत होगा तथा यह रांचीमऽ अवज्जत होगा।
- (3) ऽवतऽकिनकाय को राँय सरकार तऽरा ऽाधिकार पऽ जारऽ ऽकये जाने के बाद हऽऽवयव्हालय का संचालन आरंभ ऽकया जायेगा।
- (4) इस अधिनयम कऽ अनुसूची 'ए' मऽ सऽमिलत शतऽ को ऽवयव्हालय िनधाऽरतसमयाविध मऽ पूरा करेगा।
- (5) ऽवयव्हालय के शासी िनकाय, ऽबंधन बोडऽ, अकादमिक पऽरषऽ, कुलाधिकृत, कुलपित, ऽतिकुलपित, कुलसिचव, िशऽक, मुखऽ ऽवऽ एवं लेखा पदाधिकारऽ एवं अऽय अधिकारऽ यासदऽय याऽाधिकारऽ एतऽतऽरा ऽवयव्हालय के नाम से गऽठत िनकायबनाएंगे जब तक वे इस पद पर है अथवा उनकऽ सदऽयता बनी रहेगी।
- (6) ऽवयव्हालय एक असऽबऽ ऽवयव्हालय के ऽप मऽ कायऽ करऽगे और वे ऽकसी भीमहाऽव्हालय या संथान मऽ नामाऽकत ऽवऽाधिकृतऽ को उपाधिकृत (ऽडऽी), ऽडऽलोमा औरऽमाण-पऽ ऽदान करने हेतु सबऽता नहऽं दे सकऽगे।
- (7) ऽवतऽक िनकाय के अंगीभूत महाऽव्हालय और संथान, जो सऽबऽता ऽाऽ हऽ औरऽवयव्हालय के ऽवशेषाधिकार का उपयोग कर रहे हऽ वे इस अधिनयम के ऽभावी होने के साथ हऽ उस ऽवयव्हालय से असऽबऽ हो जाएंगे, उनकऽ ऐसी सुवधाऽँ इस अधिनयम के लागू होने के साथ समाऽ हो जाएंगी और **झऽान इंटरनेशनल ऽवयव्हालय**के ऽवतऽक िनकाय तऽरा ऽदत सुवधाऽँ के साथ ऐसे महाऽव्हालय और संथान उस **झऽान इंटरनेशनल ऽवयव्हालय**के अंगीभूत महाऽव्हालय या संथान बन जाएंगे।
- (8) **झऽान इंटरनेशनल ऽवयव्हालय** नाम से एक िनकाय होगा और इस अधिनयम केऽवधानऽ के अनुऽप उसके पास सतत पद-ऽाऽऽ अनुऽम और सामाऽयऽितऽाऽमाणन कऽ शऽऽ होगी, सऽपित ंहण करने व उसपर आधपऽय रखने, उसे अनुबंध/संवदा पर देने अथवा किथत नाम से वाद चलाने के अधिकार हऽगे या ऽजस पर वाद दायर ऽकया जा सकेगा।
- (9) ऽवयव्हालय राँय सरकार अथवा केऽऽ सरकार से ऽकसी भी ऽकार के अनुदान अथवा ऽवऽीयसहायता ऽाऽ नहऽं कर सकऽगे।

बशतऽऽक राँय सरकार अथवा केऽऽ सरकार अनुदान या अऽय तरऽके सेऽवऽीय सहायता दे सकती है:

6

झारखंडगजट(असाधारण)सोमवार,16 मई,2016

- a)शोध ऽवकास और अऽय गितऽविधऽ के िलए जैसे राँय सरकार के अऽय गठनऽ को ऽवऽीय सहायता उपलऽध करायी जाती है अथवा
- b)ऽविशऽ शोध अथवा कायऽम आधाऽरत कोई गितऽविध;

4.

ऽवयव्हालय कऽ सऽपऽऽयऽ एवं इसके अनुऽयोग:-

- (1) ऽवयव्हालय कऽ ंथापना हो जाने पर भूिम और अऽय चल एवं अचल संपऽऽयऽ, जोझारखंड राँय मऽ ऽवयव्हालय के उऽऽय (पूितऽ) के िलए अधिऽऽहत, सृजत, ऽयवज्जत या िनिमतऽ कऽ जाती हऽ, वे ऽवयव्हालय मऽ िनऽहत हऽगी।

(2) ढवयढवढालय तूारा भूढम, भवन और अढय अधढहढहत संपढढयूढढकसी अढय उढढेढय के

ढलए इढेतेमाल नहढं हूगी िसवा ङजस उढढेढय के ढलए वे अधढहढहत कढ गयी हढ।

(3) ढवयढवढालय कढ चल अथवा अचल संपढढयूढढका ढढबंधन शासी िनकाय तूारा ढवनयढू मढ ढदढ रढढत के अनुढप ढकया जायेगा।

(4) उप धारा-(1) के अढतगत ढवयढवढालय के नाम से हढताढतरत सढपढढकोढवयढवढालय के ढवघटन अथवा समापन के फलढवढप िनधाढरत ढंग से िनयमावली मढ वढणढत तरढके से ढयुढ ढकया जाएगा।

5.

ढवयढवढालय के िनबढधन/अवरोध और बाढयताढः-

1) ढवयढवढालय के ङयावसाढयक पाढयढमू, यथा-अभयङ्गण एवं ढौढोढगकढ, िचढकढसा-शाढ, ढढबंधन आढढ के ढलए िशढण-शुढक का िनधाढरण ढवयढवढालय के तूारा राढयसरकार तूारा अधसूढित समय-समय पर िनयामक िनकाय, जैसा वह ढित्त समझेगी, के पयढवेढण मढ ढकया जाएगा।

2) ढवयढवढालय मढ नामांकन पूरढ तरह योढयता के आधार पर होगा। ढवयढवढालय मढ नामांकन कढ योढयता का िनधाढरण ढाढुढंक या अहातापरढढा मढ ढाढु ढेड और पाढयेतरऔर अतरढ पाढयचयाढ गितढविधयू अथवा राढय ढतर पर ढवयढवढालय या ढवयढवढालयू के संगठन या राढय सरकार के ढकसी अभकरण तूारा समान पाढयढमू के ढलए संचाढलित ढवेश परढढा मढ ढाढु ँकू या ढेड के आधार पर ढकया जाएगा।

बशतः ढक ढवयढवढालय के ङयावसाढयक िशढण महाढवढालयू अथवा संढथानू मढ नामांकन िनयङ्गी िनकाय के ढावधानू तूारा शाढसित/ढिनयिमत हो।

3) िनधाढन एवं आथक ँढय से ढपछडे वगू के ढवढाढिथयू के ढलए ढवयढवढालय को िशढण शुढक मढ पूरढ ढमता के कम से कम पाँच ढेढिशत को मेढा छाढवृढितकढ अनुढित देनी होगी। िनधाढनता

झारखढडगजट(असाधारण) सोमवार, 16मई, 2016

7

तथा आथक ँढय से ढपछडे वगू कढ कसौढर का िनधाढरण राढय सरकार तूारा समय-समय पर ढकया जा सकेगा।

4) ढवयढवढालय के ढवढाढिथयू कढ कुल संढया के पाँचीस ढेढिशत सीढू पर झारखढड राढय के अधवासी ढवढाढिथयू के ढलए आरढढत करने का ढावधान ढवयढवढालय को करना होगा। सीढू के आरढण का िनयमन झारखढड सरकार के िनयम और समय-समय पर जारढ आदेशू के तूारा ढकया जायेगा।

5) ढवयढवढालय को ढवयढवढालय के िशढकेतर पढू के कम से कम पचास ढेढिशतशढकेतरपढू को झारखढड राढय के अधवासी लोगू के ढलए आरढढत करने का ढावधान रखना होगा। सीढू के आरढण का िनयमन झारखढड सरकार के िनयम और समय-समय पर जारढ आदेशू के तूारा ढकया जायेगा।

6) ढवयढवढालय को अकाढमक ढतर को बनाये रखने के ढलए यथेय/पयाढु संढया मढ िशढकू एवं अधकाढरयू कढ िनयुढढ करनी होगी और यह सुढिढढत करना होगा ढकउन िशढकू या अधकाढरयू कढ योढयता ढासङ्गिक िनयामक िनकाय तूारा िनधाढरत मानक से िनढन न हो।

7) ढवयढवढालय को ढवयढवढालय से जुडढ तमाम सूचनाढँ ढवढाढिथयू एवं अढयपणधाढरयू के ढहत मढ सावजिनक करनी होगी, जैसे ढक संचाढलित पाढयढम, अलग-अलग कोढट (ढेणी) के तहत सीढु, शुढक एवं अढय परढढय, ढदत सहूलियतढ एवं सुख सुढवधाढँ, उपलढध संकाय/ढाढुयापक वगू एवं अढय ढासङ्गिक सूचनाढँ।

8) परिनयढू मढ वढणढत रढढत के अनुढप ढवयढवढालय ढढयेक अकाढमक वषू मढ उपाढि, ढडढुलोमा ढदान करने एवं अढय उढढेढय से ढढढाढत समारोह आयोढजत कर सकेगा।

- 9) ढवYढवढालय को ढथापना के पाँच वषु के भीतर राऒीय मूढयांकन एवं ढेढयायन ढरषु (NAAC) से ढेढयायन ढेढाU करना होगा और भारत सरकार का अणुय िनयामक संढथाएँ, जो ढवYढवढालय ढूारा संचालित ढाणुयढम सु से साबढ हढ, के ढूारा ढेढा ढेढा का सूचना राणु सरकार को देनी होगी। ढवYढवढालय को समय-समय पर ऐसे ढेढयायन का नवीकरण कराना होगा।
- 10) इतना होते हुए भी इस अधिनयम का अनुसूची 'A' मल उढढलढखत शतु और भारत सरकार का िनयामक संढथाओं के िनयम, ढविनयम, मानदढड आढद का इन संढथाओं ढूारा ढेढा सहलियतु तथा सहयोग व कतलढके िनढाढन एवं कायल को जारढरखने के िलए उन संढथाओं को जैसी आवढयकता होगी, ढवYढवढालय के िलए इनका अनुढालन बाणुयकारढ होगा।

8

झारखढडगजढ(असाधारण)सोमवार,16 मई,2016

6. ढवYढवढालय के उढेढय:-

ढवYढवढालय का उढेढय अनुदेशनाढमक, शोध तथा ढेढसार एवं ऐसी अधगमका शाखाओं के ढूारा जैसा वो उपयुढ समझे, ढान तथा कौशलुको बढ़ाना तथा ढवढतार करना होगा और ढवYढवढालय यह ढेढप करेगा ढक ढवढािथलु तथा िशढक को िनढनिलढखत के िलए आवढयक माहौल तथा सुढवढाएँ उपलढध करायी जायल:-

- ढाणुयढम का मुढय िशढा मल ढुनिनलमाण एवं नवाचार, िशढण के नवीन तरढके, ढेढिशढण तथा अधगम ऑनलाइन अधगम सढहत, सढढमिढत अधगम, सतत िशढा एवं अणुय तरढके तथा ढकढकृत एवं ढयढढवका ढहतकर ढवकास;
- ढवढवध अनुशासनुमल अणुययन;
- अंतर अनुशासनिक अणुययन;
- राऒीय अखंडता, धमलिनरढेढता एवं सामाढजक समता तथा अणुतरराऒीय मेलिमलाप एवं नीतिशाढ।

7. ढवYढवढालय िलंग, धमल, वगल, रंग, ढंथ, अथवा मत से ढरे सबके िलए खुला होगा:-

ढकसी भी ढयढढ को ढवYढवढालय के ढकसी कायललय अथवा उसके ढकसी अणुय ढेढािधिकार का सढयता से अथवा ढकसी ढडढी, ढडढलोमा अथवा अणुय अकादिमक वैशिढणुय ढाणुयढम मल नामांकन से िलंग, मत, वगल, जालित, जणुम के ढथान और धािमलक ढवYढास अथवा राजनीतिक या अणुय मतवाद के आधार ढर ढढपात या ढेढढाव कर वढचित नहढ ढकया जाएगा।

8. ढवYढवढालय के कायल एवं शढढाँ:-

- ढवYढवढालय का ढेढशासन एवं ढेढढंधन, इसके अंगीढूत महाढवढालयु का ढेढशासन एवं ढेढढंधन तथा शोध, िशढण, ढेढिशढण के केणुङु का ढवढतार एवं सतत िशढा, दूरढथअधगम एवं ई-लिनढग के ढवढतार एवं ढहुँच को इसके झारखढड राणु मल अवढढथत ढरसर मल संचालन व ढेढढंधन;
- (ii) ढवढान, ढेढौढोगिकल, मानढवकल, समाज ढवढान, िशढा-शाढ, ढेढढंधन, वाढणाय, ढविध, ढामढसी, ढवाढढय सेवा एवं अणुय ढेढु मल शोध, उाँच िशढा, ढयावसायिक िशढा, िशढण- ढेढिशढण, सतत िशढा, दूरढथ अधगम एवं ई-लिनढग के संसाधनु को उपलढध कराना;
- (iii) शैढढक ढेढौढोगिकल, िशढण एवं अधगम ढेढढया मल नवाचार ढेढयोग, राऒीय एवं अणुतरराऒीय संढथाओं के साथ सहयोग एवं वैसी संढथाओं को संयुढ कायलढम का ढेढताव देना ढजससे िशढा के ढवढरण एवं अणुतरराऒीय मानक को ढवकिसत एवं ढेढाU करने मल िनरंतरता रहे;

झारखढडगजढ(असाधारण) सोमवार,16मई,2016

- (iv) िशढा ढेढान करने मल लचीलेढन के िलए िनधािरत ढाणुयढम, ढाणुयचयल एवं ढेढाली मल इलेढेढािनक एवं दूरढथ अधगम ढवढहत करना;

- (v) पर४५ा का आयोजन तथा ऒकसी ंय० के नाम ढव४व५ालय त्ारा तय शत५के साथ उपािध, ऒड॒लोमा या ढमाण-प५ और अ॒य अकादिमक०विश५ता ढदान करना अथवा ढविनयम५ म॒ व५णत
- तर४के से उस उपािध, ऒड॒लोमा या ढमाण-प५ और अ॒य अकादिमक०विश५ता या नाम को वापस लेना;
- (vi) फेलोशिप (िश५ावृ०), छा५वृ०, पदक और पुर५कार ५था०पत एवं ढदान करना;
- (vii) पारिनयम म॒ व५णत तर४के केअनु०प मानद उपािध या अ॒य ढविश५ता ढदान करना;
- (viii) उट०५य५ क० ढाि॒ म॒ आव५यक सहायता के िलए ५कूल, के॒, सं५थान, महा०व५ालय क० ५थापना
- और ढव४व५ालय के मतानुसार काय॒ तथा पा॒य॒ का आयोजन;
- (ix) ढव४व५ालय के मतानुसार िश५ा ढदान करने व ढयोजन५ के ढो॒साहन के िलए ऒकसी महा०व५ालय, के॒, सं५थान को अंगीभूत महा०व५ालय घो०षत करना या नये अंगीभूत महा०व५ालय, के॒, सं५थान क० ५थापना करना;
- (x) शोध, िश५ण साम५ी एवं अ॒य काय५ के िलए मु५ण, ढकाशन एवं पुन०पादन हेतु ढबंधन एवं ढदशानि५, स०मेलन५, काय॒शालाओं एवं संगो०य५ का आयोजन;
- (xi) फान संसाधन के॒ क० ५थापना;
- (xii) ढव५ान, ढौ॒िगक०, मान०वक०, समाज ढव५ान, िश५ा, ढबंधन, वा५णाय, ढविध, फाम५सी, ५वा५यसेवा
- एवं अ॒य स०ब५ ५े५ म॒ अनुसंधान तथा शै५क काय॒ का ढायोजनएवं दा५ि॒व वहन करना;
- (xiii) समान उट०५य५ के िलए ऒकसी शै५क सं५थान के साथ सहयोग व संब५ता;
- (xiv) ढव४व५ालय के उट०५य५ क० ढाि॒ के िलए आभासी (वचु॒अल) पारसर समेत पारसर५ क० ५थापना;
- (xv) पेटे॒ट ढकृि के शोध, योजना अधिकार५ एवं ऐसे समान अधिकार५ के साथ स५मॢाधिकार५ से अनुसंधान के संबंध म॒ पंजीकरण का दा५ि॒व लेना;
- (xvi) ढव४व५ालय के आंिशक अथवा पूण॒ उट०५य५ क० ढाि॒ हेतु दुि॒या के ऒकसी भी ऒह५े के शै५क
- एवं अ॒यसं५थान५, ढव४व५ालय५ के साथ ढव५ािथ५, शोधािथ५, िश५क५, कम॒चा५रय५ के आदान-ढदान के त्ारा संबंध अथवा सहयोग बनाना जैसा वो उचित समझे;
- 10 झारख॒डगजट(असाधारण)सोमवार,16 मई,2016
- (xvii) अनुसंधान, ढिश५ण, परामश॒ तथा इस ढकार क० अ॒य सेवाएँ देना, जो ढव४व५ालय के ढयोजन के िलए आव५यक हो;
- (xviii) िश५क५, शोधािथ५, ढशासक५ एवं ढव५ान, ढौ॒िगक०, मान०वक०, समाज ढव५ान, िश५ा, ढबंधन, ढविध, वा५णाय, फाम५सी, ५वा५य सेवा एवं स०ब५ ५े५ के ढवशेष५ के बीच ढव४व५ालय के ल५य५ क० ढाि॒ के िलए संबंध बनाये रखना;

- (xix) मॉहलाओं एवं अण्डे वंचित ढवढाथिथु के िलए ढवढवढालय तारा यथासंभव वांछनीय ढवशेष ढयवढथा करने पर ढवचार;
- (xx) ढवढवढालय के ढय का िनयमन, ढवढका ढिबंढन एवं लेखा का रख-रखाव;
- (xxi) ढवढवढालय के उढेढ्य एवं लढ्य ढाढिढ के िलए हढतांतरण तारा िनिध, चल एवंअचल सढपढढ, उपढकर, सॉरटवेरएवं अण्डे संसाधन को ढयवसाय, उढोग, समाज केअण्डे वगु, राढीय एवं अण्डेरराढीय संगठन अथवा ढकसी अण्डे ढेत से उपहार, दान, उपकार या वसीयत के ढप मढ ढाढ करना;
- (xxii) ढवढाथिथु के िलए सभागार, छाढावास एवं िशढक तथा कमचाढरय के िनवास के िलए आवास का िनमाण, रख-रखाव एवं ढयवढथा;
- (xxiii)खेल, सांढकृतिक- सह-पाण्यचया एवं अितारढ पाण्यचया गितढविधय कढ उण्डित के िलए केण्डु, ढरसर, सभागार, भवन, ढढेढडयम का िनमाण, ढिबंढन तथा रख-रखाव;
- (xxiv)ढवढवढालय के िनवासी ढवढाथिथु, िशढक तथा कमचाढरय के िलएअनुशासन बनाये रखने और उनके ढवाढढय, सामाण्य कढयाण, सामाढजक एवं सांढकृतिक गितढविधय के ढोढसाहन, संवढन हेतु ढयवेढण, िनयंढण तथा िनयमन;
- (xxv) ढारिनयम तारा िनधाढरत ढढस एवं अण्डे शुढक तय करना, मांगना तथा ढाढ करना;
- (xxvi)ढैलोिशप (शोधवढढ), छाढवढढ, ढुरढकार, ढदक एवं अण्डे ढुरढकार कढढथापना;
- (xxvii)ढवढवढालय आवढ्यकता या ढियोजन को ढूरा करने कढ ँढ्य से ढकसीढूमिया भवन को खरढदने, ढढे पर लेने या उपहारव वसीयत, ढवरासत या अण्डे तरढके से काय हेतु ढाढ कर सकेगा और यह उन िनयम व शत के ढप मढ ढवीकाय हो सकता है, ढजससे ढकसी भवन को बनाने या काय करने, उसमढ ढरवतनकरने और रख-रखाव हेतु उचित हो;
- (xxviii)ढवढवढालय के ढहत, गितढविधय एवं उढेढ्य कढ संगित कढ ँढ्य से जो माण्य हो, उसके अनुढप ढवढवढालय कढ चल या अचल सढपढढया उसके ढकसी ढहढे से को ढेचने, ढविनयम, ढढेढा या अण्डे तरढके से ढिबंढित करना;

झारखण्डगजट(असाधारण) सोमवार, 16मई, 2016

11

- (xxix) िनमाण और समथान, कढौती और वाता, वचनढढ नोट, ढविनयम ढबल, चेक और अण्डे ढविनयमेय उपढकर आकढषत और ढवीकार करना;
- (xxx) ढवढवढालय के सभी खच को ढूरा करने के िलए ढवढवढालय कढ िनिध को ढढानाऔर ढांड पर उधार लेना, ढंधक, वचनढढ नोट या अण्डे दाढियवु या ढितढभूितय कढढथापना या सढढूण अथवा ढवढवढालय कढ ढकसीसढपढढ और ढरसढपढढअथवा ढबना ढकसी ढितढभूित और माण्य िनयम और शत के अनुढप करना;

9. सढढता के अवरोधक:-

- 1) ढवढवढालय को ढकसी महाढवढालय या संढथा को सढढता देने का ढवशेषाढिकार नहढ होगा।
- 2) ढवढवढालय अनुदान आयोग अथवा सरकार तारा ढथाढपत ऐसे अण्डे िनयामक िनकाय अथवा केण्डु या राण्य सरकार, जैसा ढी हो, के तारा ढूव ढवीकृत के ढढातु हढ ढवढवढालय अपने ढरसर के अलावा कोई दूरवतढ ढरसर, अपतढ ढरसर, अण्डेयन केण्डु, ढरढढ केण्डु झारखण्ड

राँय के अउंदर या बाहर शुं कर सकेगा।

- 3) दूरथ मणाली से पाँयमः कः शुंआत केवल वयवतःलय अनुदान आयोग अथवासरकार तःरा
 वथावत ऐसी िनयामक संथा कः पूवः वीकृति के बाद कः जाएगी।

10. आगंतुक (वजटर):-

- 1) झारखंड के राँयपाल वयवतःलय के वजटर (आगंतुक) हंगे।
 2) आगंतुक (वजटर) जब दःतःंत समारोह मः ँडईी (उपाधि), ँडलोमा, चाटःर, ओहदा (पदनाम) और
 ममाण-पहुं मदान करने के िलए मौजूद रहःगे तो उसकः अयःता करःगे।
 3) वयवतःलय अथवा वयवतःलय तःरा संपोषत ँकसी संथान के िशःा के वतर,
 अनुशासन,
 िशःाचार और समुचित ँवयाशीलता को सुनिःत करने कः ँयःसेआगंतुक को
 वयवतःलय के
 मण/दौरे का अधिकार होगा।

वयवतःलय के अधिकारः

11. वयवतःलय के िनःनिलःखत अधिकारः हंगे:-

- a) कुलाधिपति b) कुलपित
 c) मिति-कुलपित d) िनदेशक/मधानाचायः
 e) कुलसिचव f) मुख्य ववःएवं लेखा पदाधिकारः
 12 झारखंडगजट(असाधारण)सोमवार,16 मई,2016
 g) परःतः िनयःक h) छः कःयाण संकायायः
 i) संकायायः j) कुलानुशासक और
 k) वयवतःलय मः अयः ऐसे अधिकारः जो पःरिनयम तःरा घोषत ँकये जाएंगे।

12. कुलाधिपति:-

- 1) कुलाधिपति कः िनयुःत मवतःक िनकाय तःरा पाँच वषः कः अविध के िलए
 आगंतुक(वजटर) के
 अनुमोदन के पःतः िनधाःरत मःवयाओं तथा एतःसंबंधी िनयमः एवं शतः के अनःप
 कः
 जाएगी। कायःकाल पूरा होने के पःतः कुलाधिपति आगंतुक कः सलाह के बाद मवतःक
 िनकाय
 तःरा पुनिनयुःत ँकये जा सकःगे।
 2) कुलाधिपति अपने कायालय पद के अधिकार से वयवतःलय के मधान हंगे।
 3) कुलाधिपति शासी िनकाय कः बैठकः कः अयःता करःगे और जब आगंतुक
 (वजटर)मौजूद
 नहःं रहःगे तब उपाधि (ँडईी), ँडलोमा या अयः अकादिमक वविशःता
 मदानकरने हेतु दःतःंत
 समारोह कः अयःता करःगे।
 4) कुलाधिपति अपने हाथ से िलःखत व मवतःक िनकाय को संबोःधित कर अपने पद से
 इःतीफा दे

सकते हॄ।

- 5) कुलाधिपति को निम्नलिखित अधिकार हॄगे, यथा:-
- a) ठकसी भी जानकारी या अभिलेख का माँग करने;
 - b) कुलपित का नियुक्त;
 - c) इस अधिनियम के विवधान के अनुषंग कुलपित को हटाने और
 - d) इस अधिनियम या परिनियम के द्वारा मंदणअपुय शॄयों।

13. कुलपित:-

- 1) कुलपित का नियुक्त कुलाधिपति ढवयवतलय अनुदान आयोग द्वारा निधाप्रतयोयताओं के अनुषंग करणगे और ये पाँच सालका अविध के िलए अपने पद पर बने रहणगे। बशतः ठक कुलपित पाँच वषा का अविध पूर होने के पठात् पाँच वषा के एक और कायकाल के िलए पुनिनयुक्त के पाह हॄगे। शता यह रहेगी ठक कुलपित के षप मणनियुक्त ढयॄ 70वषा का आयु पूर करने के बाद अपने पद से, कायकाल के दौरान या ढवतारत कायकाल से सेवािनवृतहो जाएगा।
- झारखंडगजट(असाधारण) सोमवार, 16मई, 2016

13

- 2) कुलपित ढवयवतलय के मुय कायकार और अकादिमक अधिकार हॄगे और ढवयवतलय के मामल मण सामापुय अधीण और नियंण का मयोग करणगे तथा ढवयवतलय के ढविभुन विधिकार द्वारा िलए गए फैसल पर अमल करणगे।
- 3) आगंतुक (ढवजटर) और कुलाधिपति का गैर मौजूदगी मण ढवयवतलय के दहकांत समारोह का अयता करणगे।
- 4) कुलपित यॄद यह अनुभव करण ठक ठकसी मामले पर तकाल कारवाई आवक्यक है, तो वे ढवयवतलय के ठकसी विधिकार काइस अधिनियमके तहत मंदणशॄय का इतामोल कर सकते हॄ और उस विधिकार को संब ममले मण कृत कारवाई का जानकारी दे सकते हॄ।
- बशतः ठक ढवयवतलय का विधिकार या ढवयवतलय का सेवा का अपुययॄ यॄद कुलपित द्वारा कृत कारवाई से ढयित है तो इस उप धारा के तहत इस निणय के संमेषत होने का ितिथ के एक माह के भीतर कुलाधिपति के सम अपील कर सकता है। कुलाधिपति, कुलपित द्वारा का गयी कारवाई को संपु, संशोधित या परवित कर सकते हॄ।
- 5) कुलपित ऐसी शॄय और इस तरह के अपुय काय निधाप्रत दायरे मणकर सकते हॄ।

14. कुलपित का पदापुति:-

- 1) कुलाधिपति को यॄद ठकसी समय ठकसी जाँच के पठात् आवक्यक लगे या मीत हो ठककुलपित:
- a) इस अधिनियम, परिनियम, अपुयादेश के तहत मंदणकतयके निवहन मणढवफल रहे हॄ; अथवा

- b) ढवYढवढालय के ढहत; के ढवपरढत पूवा[ईह से ढेढरत होकर काय[ढकये ह; या
c) ढवYढवढालय के मामल; को सुलझाने मऱ अढम ह; तो कुलाढधपित यह जानते
हुए भी ढक कुलपित का काय[काल पूरा नहऱं हुआ है, कारण बताते हुए िनधा[रत
ित्तिथ से पद से इहेतीफा देने के िलए िलखत आदेश दे सकते हऱ।

- 2) उप धारा (1) के तहत ढवशेष आधार पर कार[वाई के ढकसी ढेढताव कऱ सूचना ढदए ढबना कोई
आदेश पऱरत नहऱं ढकया जाएगा, ढेढताढवत आदेश के िखलाफ कारण बताने का ँकसमुचित
अवसर कुलपित को ढदया जाएगा।

15. ढित-कुलपित:-

- 1) ढित-कुलपित कऱ िनयुढ ढ कुलाढधपित तऱराइस तरऱके से और ऐसे काय; के िलए ढदढव
वऱण[त
शढढय; के तहत कऱ जा सकेगी।

14 झारखढडगजट(असाधारण)सोमवार,16 मई,2016

- 2) ढित कुलपित उप धारा-1 के तहत िनयुढ ँक ढेढेसर के ढप मऱ अपने
कत[ऱय;केअलावा अपने कत[ऱयका िनव[हन करऱगे।
3) ढितकुलपित कुलपित को उनकऱ आवऱयकतऱनुसार उनके कत[ऱय;के िनव[हन मऱ
सहायता करऱगे। 4)

ढितकुलपित ढवत[क िनकाय तऱरा िनधा[रत रािश मानदेय के ढप मऱ ढाU करऱगे।16.

ढिदेशक (ढेढेढे)/ढधनाचाय[(ढेढे) :-ओमन

ढिदेशक;/ढधनाचाय; कऱ िनयुढ ढ िनढद[य ढंग से तथा ढदढवशढढय; का ढयोग कर कऱ जा
सकेगी।17. **कुलसिचव :-**

- 1) कुलसिचव ढवत[क िनकाय के अढयऱ तऱरा पऱरिनयम मऱ िनढद[य ढावधान; के
अनुसार िनयुढ ढकये जाएंगे। कुलसिचव ढवYढवढालय अनुदान ँयोग तऱरा
ढिन्धा[रत योढेतता को धारण करऱगे। 2) कुलसिचव को ढवYढवढालय कऱ ओर से
अढभलेख; ढेढतावेज;को अढभढमाऱणत करने, ढमाण-पङ्ग पर हेढताऱ करने तथा
समझौता करने कऱ शढढ होगी तथा वे ऐसी ढूसरऱशढढय; का ढयोग एवं काय;
को पूरा करऱगे जो उनके िलए िनढद[य ढकया गया हो।

- 3) कुलसिचव काय[कारऱ पऱरष; एवं अकादिमक पऱरष; के पदेन सदऱय सिचव
ह;गेलेढकन उढहऱ मत देने का ँधिकार नहऱं होगा।

18. मुढय ढवढतथा लेखा ँधिकारऱ :-

- 1) ढवत[क िनकाय के अढयऱ तऱरा मुढय ढवढतथा लेखा पदाढधिकारऱ कऱ िनयुढ ढ
इस ढकार कऱ जाएगी, जैसा पऱरिनयम मऱ िनढद[य हो।
2) मुढय ढवढ एवं लेखा पदाढधिकारऱ ऐसी शढढय;का ढयोग तथा दाऱय;व; का िनव[हन
कर सकऱ गे जैसा ढक पऱरिनयम मऱ िनढद[य है।

19. परऱढा िनयङ्क:-

- 1) परऱढा िनयङ्क ढवYढवढालय का पूण[कऱलिक पदाढधिकारऱ होगा तथा पऱरिनयम
केअनुढप कुलाढधपित तऱरा िनयुढ ढकया जाएगा।

- 2) परऱढा िनयङ्क के दाऱय;व ह;गे:-

a)

परऱढा को अनुशासित एवं कुशल तरऱके से संचऱलित करना;

b)सईत

गोपनीयता कऱ ँढय;से ढुर-पङ्ग के चयन कऱ ँयवेढथा करना;

झारखढडगजट(असाधारण) सोमवार,16मई,2016

- c) िनधा[रत समय-साऱरणी के अढतगत उढरपुढेतकाढे के मूढयांकन कऱ
ँयवेढथा करना;

- d) परऱढा-ढणऱली कऱ िनऱपऱता और ढवषयिनऱता को उढनत बनाने तथाढवढािथ; कऱ

योध्यता के सह8 आकलन क8 आँदुसे बेहतर साधन अपनाने के िलए सतत् समीक्षा करना;

e)

कुलपित के त्ारा समय-समय पर सूपे गए उन सारे दाियवु का िनवाहन करना जो परक्षा से संबंधित हू।

20. अणुय अधिकार:-

छात्र क8याण संकायाणुय, संकायाणुय और मुध्य कुलानुशासक सँहत ढवढवढालय के अणुय अधिकारयु के दाियवु, शढुयु और िनयुढु का तरका वैसा होगा, जैसा िनढुदयु ढकया गया हो।

21. ढवढवढालय के ढाधिकार:-

ढवढवढालय के िनढनिलखत ढाधिकार हूगे, यथा-

a) शासी िनकाय

b) ढबंनन बोडु

c) अकादिमक पारषु

d)

ढवढसिमित e) योजना बोडु

f) वैसे अणुय सभी ढाधिकार, जो अधिनयम के त्ारा ढवढवढालय के ढाधिकार

घोषतढकये गये हू। 22. शासी िनकाय

1)

शासी िनकाय के िनढनिलखत सदस्य हूगे, यथा-

a)कुलाधिकपित;

b)कुलपित;

c)सरकार के सिचव, उाच एवं तकनीका िशक्षा ढवभाग, झारखंड अथवा उनका ढितिनिध;

d)ढवतुकिनकाय त्ारा नामित पाँच ढयढु, ढजनम8 से दो ढेयात िशक्षाढवु हूगे;

16

झारखंडगजट(असाधारण)सोमवार,16 मई,2016

e)कुलाधिकपित त्ारा नामित ढवढवढालय के बाहर सेएक ढयढु, जो ढबंनन और ढौढोगका के ढवशेष के ढप म8 हूगे।

f)कुलाधिकपित त्ारा नामित एक ढवढवशेष।

2) शासी िनकाय ढवढवढालय का सवराच ढाधिकार एवं मुध्य शासी िनकाय होगा। इसका िनढनिलखत शढुयाँ हूगी, यथा:-

a)िनयम, पारिनयम, अधिनयम अथवा अणुयादेश का ढयोग करते हुए

ढवढवढालय के कायु को िनयंढुत, िनदुशित एवं संचालित करना;

b)ढवढवढालय के अणुय िनणयु क8 समीक्षा करना यढद वे िनयमु, अणुयादेश, कानून के ढावधान के अनुढप नह8ं हो;

c)ढवढवढालय के वाषुक ढितवेदन तथा बजट को अनुढुढदत करना;

d)ढवढवढालय त्ारा अनुपालन हेतु ढवढतु नीितयु का िनमाण;

e)ढवढवढालय के ढवघटन के िलए ढवतुक िनकाय को अनुशंसा करना, यढदसंपूण

ढयास के बाद भी ढवढवढालय ठडक ढंग से कायु संपुन करने का ढेथित म8

नह8ं हो;

f)पारिनयमु त्ारा िनढुदयु अणुय शढुयु का ढयोग करना।

3) शासी िनकाय क8 बैठक एक कैलडर वषु म8 कम-से-कम तीन बार होगी।

4) बैठक का कोरम चार होगा:-

बशत उाच एवं तकनीका िशक्षा ढवभाग, झारखंड सरकार के सिचव या उनका अनुपढेथित

मल निदेशक, उांच िशका ढुकेक बैठक मल उपलुथत हल, ँजसमल सरकार ः नीतियु या निदलशु से संबंथत निणाय िलये जाने हल।

23. ढुबंधन ढुडलः-

(1) ढुबंधन ढुडल िनलनिलुखत सदललु के युग से गळठत हलगा, यथा-

a)कुलपित;

b)सरकार के सिचव, उांच एवं तकनीकल िशका ढवभाग, झारखंड अथवा उनके ढुतिनिध;

c)ढवतलक िनकाय ललरल नलमित शलसी िनकाय के दु सदललु;

झारखंडगजट(असाधारण) सोमवार,16मई,2016

d)ढवतलक िनकाय ललरल नलमित तीन सदललु, जो शलसी िनकाय के सदललु नहळं हल;

e)िललकल के ढीच से ढवतलक िनकाय ललरल नलमित तीन सदललु;

f)कुलपित ललरल नलमित दु िललक।

(2) ढुबंधन ढुडल के अलुयल कुलपित हलगे।

(3) ढुबंधन ढुडल कल शळुलल एवं कायल ढलरिनयम मल जलसल िनळदल है, के अनुळुढ हलगा।

(4) ढुबंधन ढुडल कल बैठक का कोरम ढलँ हलगा;

बशतल ँक सरकार के सिचव, उांच एवं तकनीकल िशका ढवभाग, झारखंड सरकार अथवा उनकल

अनुपलुथत मल निदेशक, उांच िशका ढुकेक बैठक मल उपलुथत हल; ँजसमल सरकार कल नीतियु/निदलशु से संबंथत निणाय िलये जाने हल।

24. अकादिमक ढलरषलः-

1) अकादिमक ढलरषल कुलपित तथा वलसे सदललु के युग से बनेगा, जलसल ढलरिनयम मल िनळदल है।

2) अकादिमक ढलरषल के अलुयल कुलपित हलगे।

3) आकादिमक ढलरषल ढवळवललय कल ढुलल अकादिमक िनकाय हलगी, जलसल ँक अधिनयम,

ढलरिनयमल, अलुयादेशल मल ढलवधान है और यह ढवळवललय कल अकादिमक नीतियु कासंयुजन तथा ढयलवेलण करेगी।

4) अकादिमक ढलरषल कल बैठक का कोरम ढलरिनयम के निदलशु के अनुळुढ हलगा।

25. ढवलसिमितः-

1) ढवलसिमित ढवळवललय कल ढुलल ढवललीयिनकाय हलगी, जो ढवलसंबंधी ढलढलल कल देख-रेख करेगी।

2) ढवलसिमित का संवधान, शळुलल और कायल िनळदल ढलवधानल के अनुळुढ हलगे।

26. युोजना ढुडलः-

1) युोजना ढुडल ढवळवललय का ढुधान युोजना िनकाय हलगा और यह सुनिळुठत करेगा ँक ढुनियलदळ

ढलँचा और अकादिमक सढथल ढणलली ढवळवललय अनुदान आयुग तथा अलुय ढलरषल ललरल िनधललरत ढलनदंडल को ढूरा करती है।

18

झारखंडगजट(असाधारण)सोमवार,16 मई,2016

2) योजना बोर्ड का संवधान, उसके सदस्य का कार्यकाल तथा उनका शैक्षिक एवं कार्य का
निर्धारण निम्नोक्त संवधान के अनुषंग होगा।

27. अणुय संविधिकार:-

व्यवस्थालय के अणुय संविधिकार का गठन, शैक्षिक तथा कार्य निर्देश के अनुषंग हो
सकेगा।

28. एकसि संविधिकार अथवा निकाय का सदस्यता के लिए अयोग्यता:-

कोई व्यक्ति व्यवस्थालय के एकसि संविधिकार या निकाय का सदस्यता के योग्य नह
होगा, यद वह:

- यद वह अवैध मानस का है और उसे सहम प्रयायालय द्वारा ऐसा घोषित किया गया है;
- यद अमुक दवा लिया है;
- यद नैतिक खलन का अपराधी पाया गया है;
- एकसि परक्षा के संचालन में अनुचित व्यवहार करने अथवा मोखसाहत करने के लिए कह

भी, एकसि ष म दंडित किया गया है।

29. रैयों व्यवस्थालय के संविधिकार अथवा निकाय के गठन या कार्यवाह को अमाय नह करगी:-

व्यवस्थालय के एकसि संविधिकार का कार्यवाह इसीलिए अमाय नह का जायेगी क

व्यवस्थालय के एकसि संविधिकार या संगठन का रैय अथवा संवधान में कोई दोष है।

30. सिमितय का गठन:-

व्यवस्थालय के संविधिकार ऐसी शत के साथ जो विशेषकाम के लिए आवश्यक ह तथा जो

परिनयम द्वारा अनुमोदित ह, ऐसी सिमितय का गठन कर सका गे।

परिनयम, अयादेश और विनयम

31. प्रथम परिनयम:-

1) इस अधिनयम के संवधान तथा इसके अंतगत बनाये गए नियम के अनुकूल पहलापरिनयम

निम्नलिखित मामल में से सभी या एक का निर्धारण करेगा, यथा-

a) व्यवस्थालय के संविधिकार और अणुय निकाय के लिए समय-समय पर गठन, शैक्षिक

और कार्यवाह का निर्धारण;

b) कुलाधिपति, कुलपति का नियुक्त का शत और उनका शैक्षिक तथा अधिकार का निर्धारण;

झारखंडगजट(असाधारण) सोमवार,16मई,2016

c) कुलसिचव और मुख्य वक्त तथा लेखापदाधिकार का नियुक्त का मीय और शत तथा उनका शैक्षिक और कार्य का निर्धारण;

d) अणुय अधिकार तथा शिक्षक का नियुक्त का पति और शत तथा शैक्षिक और कार्य का निर्धारण;

- e) ढवYढवढालय के कम[चारय; कऱ सेवा-शतु; का िनधारण;
 - f) कम[चारय; अथवा ढवढािथि[य; और ढवYढवढालय के बीच ँकसी ढिकार के ढववाद कऱ ँधित मऱ मऱयधता कऱ ढढढया का िनधारण;
 - g) मानद उपािधियाँ ढिदान करना;
 - h) ढवढािथि[य; के िशुण शुऱक कऱ अदायगी मऱ छूट और छाहुवढुतथा फेलोिशिप ढिदान करने कऱ ढढढया का िनधारण;
 - i) सीटु; के आरुण के िनयम सढहत ढवेश कऱ नीित का िनधारण; तथा
 - j) ढवढािथि[य; से िलया जाने वाला शुऱक।
- 2) ढवYढवढालय का पहला ढरिनयम शासी िनकाय तुारा बनाया जाएगा और ढवीकृित हेतु राँय सरकार को समढपुत ँकया जाएगा।
 - 3) ढवYढवढालय तुारा समढपुत ँकए गए पहले ढरिनयम ढर राँय सरकार ढवचार करेगी और यथासंभव इसकऱ ढढािु के साठ ँदन; के भीतर इसकऱ ढवीकृित, संशोधन; अथवा ढबना संशोधन के जैसा वह आवश्यक समझे, देगी।
 - 4) राँय सरकार तुारा ढवीकृत पहले ढरिनयम; ढर ढवYढवढालय अपनी सहमित संढेढषतकरेगा, अथवा राँय सरकार तुारा उप धारा-3 के अंतगत ँकये गये ँकसी संशोधन या सभी संशोधन; को नहऱं लागू करने ढर कारण बतायेगा। राँय सरकार ढवYढवढालय के सुझाव; को माऱय या अमाऱय कर सकती है।
 - 5) राँय सरकार ने पहले ढरिनयम को ँजस ँप मऱ अंततः ढवीकार ँकया है उसे शासकऱय राजपुऱ मऱ ढिकािशत करेगी और यह ढिकाशन कऱ ितिथ से लागू माना जाएगा।

32. ढरवतढ ढरिनयम:-

- 1) इस अधिनयम और इसके बाद बनाये गये िनयम; ढवYढवढालय के ढरवतढ ढरिनयम; मऱ िनऱनिलऱखत सभी या ँकसी एक के बारे मऱ ऱयवधता दे सकता है, यथा-
 - a) ढवYढवढालय के नये ढढािधिकार; का सृजन;
 - b) लेखा नीित और ढवढीय ढढढया;
 - c) ढवYढवढालय के ढढािधिकार; मऱ िशुक; का ढढितनिधुव;
 - d) नए ढवभाग; का िनमाण और वतमान ढवभाग; का उढमूलन अथवा पुनगाठन;
 - e) ढदक; और ढुरढकार; का िनधारण;
 - f) ढद; के िनमाण और ढवलोपन कऱ ढढढया;
 - g) शुऱक; का पुनरुऱण;
 - h) ढविभढन ढवषय; मऱ सीटु; कऱ संढया मऱ बदलाव तथा
 - i) अऱय सभी मामल; का ढरिनयम तुारा िनधारण, जो इस अधिनयम मऱ वऱणत ढढावधान के अंतगत आवश्यक ह;।
- 2) पहले ढरिनयम से इतर ढवYढवढालय के ढरिनयम; का िनमाण शासी िनकाय कऱ सहमित से ढबंधन ढोड तुारा ँकया जाएगा।

- 3) उप धारा (2) के अंतर्गत निम्नलिखित परिणियम को राज्य सरकार के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा, जिससे वह स्वीकृत करेगी अथवा यदि आवश्यक समझे तो कुछ संशोधन के लिए परामर्श, परिणियम का प्रतिरूप का तिथि से यथासंभव दो महिने के भीतर देगी।
- 4) राज्य सरकार द्वारा सुझाये गये संशोधन पर शासी निकाय अवचार करेगा और परिणियम मंजूर करेगा
गये परिवर्तन के प्रति सहमित अथवा राज्य सरकार द्वारा सुझाये संशोधन पर अंतर्पणी के साथ उसे वापस कर देगा।
- 5) राज्य सरकार शासी निकाय द्वारा का गयी अंतर्पणी पर अवचार करेगी तथा परिणियम को बनाना संशोधन अथवा संशोधन के साथ स्वीकृत करेगी और इसे शासकिय राजपत्र मंजूरित करायेंगी जो प्रकाशन का तिथि से प्रभावी होगा।

33. प्रथम अध्यादेश:-

- 1) इस अधिनियम के प्रावधान के अधीन निम्नलिखित नियम, परिणियम के तहत, प्रथम अध्यादेश सभी मामले या निम्नलिखित मंजूर से कोई एक अथवा सभी का व्यवस्था कर सकता है, यथा-
a) व्यवस्थालय मंजूर विधायक का प्रवेश और इस रूप मंजूर नामांकन;
b) व्यवस्थालय का ऑडिट, ऑडिटोमा एवं प्रमाण पत्र के लिए अध्ययन हेतु पाठ्यक्रम का

निर्धारण;

झारखंड गजट (असाधारण) सोमवार, 16 मई, 2016

21

- c) ऑडिट, ऑडिटोमा, प्रमाण पत्र और अध्ययन अकादमिक वैशिष्ट्य प्रदान करने हेतु उच्चतम योग्यता;
- d) फेलोशिप, छात्रवृत्ति, वजीफा, पदक और पुरस्कार हेतु शर्त;
- e) कार्यालय के नियम और परीक्षण निकाय, परीक्षक तथा मध्यस्थ का नियुक्ति के तर्क के सहित परीक्षाओं का संचालन;
- f) विभिन्न पाठ्यक्रम का परीक्षाओं, उपाधिय और ऑडिटोमा के लिए व्यवस्थालय द्वारा लिया जाने वाला शुल्क;
- g) व्यवस्थालय के विधायक के निवास का शर्त;
- h) विधायक के अवधि अनुशासनात्मक कार्रवाई संबंधी प्रावधान;
- i) व्यवस्थालय के अकादमिक जीवन का उचित के लिए आवश्यकता अनुभव करे जाने पर किसी निकाय के सृजन, संयोजन और कार्य पर अवचार;
- j) उच्च शिक्षा के अध्ययन व्यवस्थालय एवं संस्थान के साथ सहकारिता और सहयोग के तर्क;
- k) ऐसे अध्ययन मामले जिनका व्यवस्था अध्यादेश के द्वारा इस अधिनियम के अंतर्गत आवश्यक है;
- 2) व्यवस्थालय का प्रथम अध्यादेश प्रबंधन बोर्ड द्वारा अनुमोदन के बाद कुलाधिपति द्वारा बनाया जाएगा, जिससे अनुमोदन हेतु राज्य सरकार को प्रस्तुत किया जाएगा।
- 3) उप धारा (2) के तहत राज्य सरकार कुलाधिपति द्वारा संप्रेषित अध्यादेश पर अवचार करेगी

और जहाँ तक संभव होगा इसका मॉडल के साथ उद्देश्य के भीतर वह इसे स्वीकृत करेगी या इसमें संशोधन हेतु सुझाव भी देगी।

4)

कुलाधिपति अध्यादेश के संदर्भ में उद्देश्य के सुझाव को शामिल कराने अथवा राज्य सरकार द्वारा उद्देश्य के सुझाव को शामिल नहीं करने के कारण बताते हुए प्रथम अध्यादेश को वापस भेजाने। यद्यपि कुछ हो तो राज्य सरकार इसका मॉडल के बाद कुलाधिपति का उद्देश्य पर विचार करेगी और संशोधन के साथ या बनाने किसी संशोधन के व्यवस्थालय के प्रथम अध्यादेश को राज्य सरकार शासक राजपट्ट में प्रकाशित करेगी, और यह प्रकाशन का तिथि से प्रभावी होगा।

22

झारखंड गजट (असाधारण) सोमवार, 16 मई, 2016

34. परवर्तक अध्यादेश:-

1) सभी प्रथम अध्यादेश के अलावा अध्यादेश अकादमिक परिषद द्वारा बनाये जाएँगे जो शासी

निकाय द्वारा अनुमोदित किये जाने के बाद राज्य सरकार के समक्ष अनुमोदन हेतु प्रस्तुत किये जाएँगे।

2) उपधारा (1) के तहत अकादमिक परिषद द्वारा सौंपे गये अध्यादेश पर जहाँ तक संभव हो राज्य

सरकार इसका मॉडल के दो माह के भीतर विचार करेगी और इसे स्वीकृत कर सकती है या इसमें संशोधन हेतु सुझाव दे सकेगी।

3) अकादमिक परिषद या तो राज्य सरकार के सुझाव के अनुषंग अध्यादेश को संशोधित करेगी या

सुझाव को राज्य सरकार को पुनः उसे वापस सौंपेगी, यद्यपि कोई हो। राज्य सरकार अकादमिक

परिषद का उद्देश्य पर विचार करेगी और अध्यादेश को संशोधन के साथ या बनाने संशोधन के

शासक राजपट्ट में प्रकाशित करेगी, और यह प्रकाशन का तिथि से प्रभावी हो जाएगा।

35. विनियम:-

ऐसे प्रत्येक अधिकार और ऐसे अधिकार द्वारा बनायी गयी समितियों के लिए शासी निकाय का

पूर्व स्वीकृति से व्यवस्थालय के अधिकार इस अधिनियम के अनुकूल नियम, परिणियम और

अधोलिखित अध्यादेश के संगत विनियम बना सकेंगे।

36. निदेश देने के राज्य सरकार के अधिकार:-

1) शिक्षण के क्षेत्र, परीक्षा और शोध तथा व्यवस्थालय से संबंधित किसी अन्य मामले में राज्य सरकार ऐसे लोग, जिन्हें वह उपयुक्त समझती है, के द्वारा मूल्यांकन करा सकेगी।

2) ऐसे मूल्यांकन के आधार पर सुधार के लिए राज्य सरकार अपनी अनुशंसाएँ व्यवस्थालय को

संभेष्ट करेगी। ढवयवतलय ऐसे सुधाराक उपाय और ढयप करेगा ताक इन अनुशंसाओं का अनुपालन सुनिश्चित ढकया जा सके।

- 3) यढद ढवयवतलय उपधारा (2) के अंतगत राँय सरकार तारा कऱ गयी अनुशंसा का पालन करने

मऱ उचित समयाविध मऱ ढवफल रहता है तो राँय सरकार उसे ऐसा िनदऱश दे सकेगी जैसा वह

उपयुढ समझे। राँय सरकार तारा ढदये गये िनदऱशऱ का अनुपालन ढवयवतलय अढवलंब करेगा।

झारखढडगजट(असाधारण) सोमवार, 16 मई, 2016

23

ढवयवतलय कऱ िनिधयँ

37. ढथायी िनिध:-

- 1) उदेदऱय-पङ्क मऱ िनढदय राँिश के साथ ढवतक िनकाय ढवयवतलय के िलए एक ढथायी कोष कऱ ढथापना करेगा।
- 2) ढवयवतलय के इस अधिनयम का अनुपालन तथा अधिनयम, पऱरिनयम तथा अढयादेशऱ के अनुसार संचालन को सुनिश्चित करने हेतु ढथायी िनिध का उपयोग जमानत जमा राँिश के ढप मऱ होगा। यढद ढवयवतलय अथवा ढवतक िनकाय इन अधिनयम, पऱरिनयमऱ और अढयादेशऱ के अनुकूल ढावधानऱ का अनुपालन नहऱं करता है तब राँय सरकार को यह पूरऱ राँिश अथवा इसका एक ढहऱसा/अंश जऱत कर लेने का अधिकार होगा।
- 3) ढवयवतलय इस ढथायीकोष से हुई आमदनी का उपयोग ढवयवतलय के आधारभूत ढाँचे के ढवकास के िलए कर सकेगा, ढवयवतलय के ढदनानुढदन ढयय के िलए नहऱं।
- 4) ढवयवतलय के ढवघटन तक ढथायी कोष कऱ राँिश ऐसे साधनऱ मऱ िनवेँिशत कऱ जाएगी जैसा सरकार तारा िनवेश हेतु िनदऱशित ढकया जाएगा।
- 5) दऱघाविध कऱ ढितभूित कऱ ढेथित मऱ, ढितभूितयऱ का ढमाण-पङ्क सरकार के सुरऱहत संरक्षण मऱ संरक्षण मऱ खजाने मऱ जमा ढकया जाएगा। शऱल यह है ढक सरकार के आदेश के ढबना यह राँिश िनकाली नहऱं जा सकेगी।

38. सामाढय िनिध:-

- 1) ढवयवतलय एक कोष कऱ ढथापना करेगा, ढजसे सामाढय कोष कहा जाएगा, ढजसमऱ िनऱनांढकत राँिशयँ जमा हऱगी:

- a) ढवयवतलय तारा ढाढ िशऱण एवं अढय शुऱक;
- b) ढवतक िनकाय तारा ढदऱकोई भी राँिश;
- c)

अपने लऱय-सिढद के ढम मऱ ढवयवतलय के ढकसी भी उपढम, यथा-परामशऱ आढद से ढाढ कोई भी राँिश;

- d) ढयासऱ, वसीयतऱ, दान, वृढऱदान और ढकसी भी अढय ढिकार का अनुदान; तथा
- e) ढवयवतलय तारा ढाढ अढय सारऱ धनराँिश।

- 2) सामाढय कोष का उपयोग िनऱनिलऱखत मदऱ मऱ ढकया जाएगा, यथा -

24

झारखढडगजट(असाधारण)सोमवार, 16 मई, 2016

a) इस अधिनयम और पऱरिनयमऱ, अढयादेशऱ और शासी िनकाय कऱ पूवऱ ढवीकृित के साथ ढवयवतलय तारा िलये गये ऋण तथा उसके ढयाज के ढुगतान हेतु;

b) ढवयवतलय कऱ पऱरसंपितयऱ के रख-रखाव हेतु;

c) धारा 7 एवं 8 के अंतगत ढविनिमत िनिधयऱ के लेखा-परऱषण के िलए ढुगतान ढकया गया शुऱक;

- d) ऽवयवतलक के पद अथवा ऽवपद मऱ दायर वादक पर हुए खच के िनदपादन हेतु ;
 e) अधिकारक, कमाचारक, िशक एवं शोध-अधिकारक के वेतन, भोजे, भवदय-
 िनिध अंशदान, ईऱयूटऱ और अऱय सुवधाओं के भुगतान हेतु;
 f) शासी िनकाय, कायकारऱ परषद, अकादमक परषद और अऱय ढाधिकारक तथा
 ढवतक िनकाय के अऱय अथवा ऱकसी सहम अधिकारऱ तऱरा ऱकये गये यादुा-
 ऱयय एवं अऱय भोज के भुगतान हेतु;
 g) फेलोशिप, िनःशुक िशकण, छादुवृदुयक, िसदटऱटिशप तथा समाज के कमजोर
 आथक वगके छादु को ऱदये गये पुरदकारक और शोध सहायकक, ढिशदुओं अथवा
 जैसी दधित हो िधिनयमक, पारिनयमक और िनयमक के अनुकूल ऱकसी भी अहता
 ढाऱ ऽवतक के भुगतान हेतु;
 h) िधिनयम के ढावधानक, पारिनयमक, अऱयादेशक, ऽविनयमक के अनुपालन मऱ
 ऽवयवतलक तऱरा ऱयय कऱ गयी ऱकसी भी रािश के भुगतान हेतु;
 i) ढवतक िनकाय तऱरा ऽवयवतलक कऱ दथापना और िस संदभक मऱ ऱकये गये
 िनवेशक कऱ मूल लागत, जो समय-समय पर भारतीय देटे ददक के ऱण ढदान कऱ दर
 से िधक नहऱं हो, के भुगतान के िलए।
 j) िस िधिनयम के पारिनयमक, िनयमक, अऱयादेशक के पालन मऱ ऽवयवतलक तऱरा
 ऱकये गये ऱयय के भुगतान हेतु;
 k) ऱकसी संथान तऱरा ऽवशेष सेवा देने के दायिदव, ऽवयवतलक को ढबंधन-सेवा
 सऱहत शासी िनकाय तऱरा ऽवयवतलक के िलए दवीकृत िसे ऱययक अथवा संबद
 अऱय कायक के भुगतान हेतु;

बशतऱ ऱक कुल आवतक ऱयय और उस वषक के िलए िनधाऱरत
 अनावतक ऱयय जैसा शासी िनकाय तऱरा िनदुत ऱकया गया है, से िधक
 ऱयय दबना शासी िनकाय कऱ पूवक दवीकृति के नहऱं ऱकया जा सकेगा।

झारखऱडगजट(असाधारण) सोमवार, 16मई, 2016

25

लेखा, अंककण एवं वाषक ढितवेदन

39. वाषक ढितवेदन:-

ऽवयवतलक का वाषक ढितवेदन ऽवयवतलक तऱरा तैयार ऱकया जाएगा ऱजसमऱ अऱय
 मामलक

समेत, ऽवयवतलक तऱरा उदकयक कऱ पूति के िलए उठाये गये कदम शािमल हुगे और िसे रांय
 सरकार

को सदपा जाएगा।

40. अंककण एवं वाषक ढितवेदन:-

- 1) ऽवयवतलक का वाषक लेखा ददलेस शीट सऱहत ऽवयवतलक तऱरा तैयार ऱकया जाएगा
 और

वाषक लेखा का अंककण वषक मऱ कम से कम एक बार ऽवयवतलक तऱरा िस उदकय से
 िनयुद

अंकककक तऱरा कराया जाएगा।

- 2) वाषक लेखा कऱ एक ढित अंककण ढितवेदन के साथ रांय सरकार को ढदुत करनी होगी।

ऽवयवतलक को समेटना

41. ऽवयवतलक का समापन:-

- 1) यऱद ढवतक िनकाय ऽविध सऱमतदंग सेऱसके गठन तथा िनगमीकरण के ढावधानक के
 अऱतगत दवयं को भंग करना चाहे तो िसकऱ सूचना कम से कम छह महऱने पहले रांय सरकार

को देनी होगी।

- 2) राॉय सरकार ऐसी सूचना (भंग करने संबंधी) मंाु करने के पठात्, जैसी आवश्यकता होगी उसके

अनुकूप भंग ँकये जाने का ितिथ से ढवयढवढालय के मंशासन का ढयवढथा मंवतक िनकाय के

ढवघटन के बाद आखरढसङ के ढवढािथि, जो ढवयढवढालय मऱ नामांढकत हढ, के पाढयढम पूरा

होने तक करेगी और सरकार मंवतक िनकाय के ढथान पर ढवयढवढालय के संचालन के िलए एक

मंशासक का िनयुढु कर सकेगी, ङजसे मंवतक िनकाय के अधिकार, कतढढयऔर कायढ सढपे जाँँगे,

जैसा इस अधिनयम मऱ वङ्गढत है।

42. ढवयढवढालय का ढवघटन:-

- a) मंवतक िनकाय यढुद ढवयढवढालय को भंग करने का ढाँछा रखता है, तो उसे राॉय सरकार को ँतङ-संबंधी सूचना िनधािरत तरढके से देनी होगी। राॉय सरकार ारा यथोचित ढवचार के पठात् िनधािरत तरढके से ढवयढवढालय को ढवघढुटत ँकया जा सकेगा।

बशढुतढक ढवयढवढालय का ढवघटन तभी मंभावी होगा जब तक ँक िनयिमत पाढयढम

के ढवढािथि,का आखरढ सङ अपना पाढयढम पूरा नहङं कर लेता है और उन सबको ँडढी

(उपािध), ँडढलोमा अथवा ङजस तरह के ढवषय हङ, मंाु हो जाँँ।

26

झारखढुडगजट(असाधारण)सोमवार,16 मई,2016

- b) जैसा ँक तरढका िनधािरत है ढवयढवढालय का ढवघटन होने पर उसका सभी संपढुढयौँऔर

देनदािरयौँ मंवतक िनकाय मऱ िनढहत हङगी।

- c) उप-धारा (1) के तहत राॉय सरकार यढुद ढवयढवढालय को ढवघढुटत करने का िनणढय लेती है, तो

िन्धािरत तरढके से समान उढेढय वाली सोसाइढुटढ; मऱ ढवयढवढालय के ढवघटन तक उप-धारा (1)

के मंावधानङ के तहत इसके शासी िनकाय का शढुढयौँ िनढहत कर सकेगी।

43. ढवशेष पारढुढथितढ; मऱ राॉय सरकार का ढविशढशढुढयौँ:-

- 1) राॉय सरकार का यढुद यह राय है ँक ढवयढवढालय ने अधिनयमङ, िनयमङ, पारिनयमङ अथवा

अढुयादेशङ मऱ से ँकसी का उढालंघन ँकया है और ढवढीय कुमंबंधन अथवा कु-मंशासन का ढुढथित

ढवयढवढालय मऱ उढपढुन हो गयी है, तो वह ढवयढवढालय को कारण बताओ सूचना जारढ कर

पढ्तालीस ँदनङ के भीतर इस आशय का उढरमांगेगी ँक ँयङ नहङं एक मंशासक का िनयुढु कर

दढ जाय।

2) ढवYढवढालय त्ारा उपधारा (1) के अंतगत द8 गयी सूचना पर ढदये गये उतल से यढद राँय

सरकार संतु है ढक इस अधिनयम, िनयम, पारिनयम और अढयादेश के ढकसी भी ढावधान

का ढथम ँया उलंघन हुआ है अथवा इस अधिनयम के त्ारा ढदये गये िनदश के ढितकूल

ढवढीय कुढबंधन अथवा कु-ढशासन है तो वह ऐसी जाँच करायेगी, ङजसे वह आवढयक समझे।

3) उप-धारा (2) के तहत राँय सरकार ऐसी ढकसी जाँच के उढेढ से जाँच-अधिकार या अधिकारय के

को िनयु करेगी, जो ढकसी भी आरोप पर अपना ढितवेदन ढेतुत करलगे।

4) उप-धारा (3) के अंतगत िनयु जाँच अधिकार या अधिकारय के पास वह8 शढOयँ हँगी जो

द8वानी अदालत त्ारा द8वानी वाद के मामल के सुनवाई के दौरान द8वानी ढढया, 1908मल ढदल

ह, यथा-

a) ढकसी ँयढ को बुलाने और उसका हाङजर को अिनवाय करने और शपथ ढदलाकर उनका

जाँचकरना;

b) ढमाण के िलए आवढयक खोज और ऐसे दढतावेज या दूसर8 अढय सामढीढेतुत करने

का िनदश देना;

c) ढकसी भी अदालत या कायालय से कोई दढतावेज मंगाना।

5) उप-धारा (3) के अंतगत िनयु अधिकार या अधिकारय के जाँच ऱरपोट ढाु होने के बाद यढद

राँय सरकार संतु है ढक ढवYढवढालय ने इस अधिनयम के ढावधान के सभी अथवा ढकसी

ढावधान का उलंघन ढकया है, िनयम, पारिनयम अथवा अढयादेश का उलंघन ढकया है अथवा

झारखढडगजट(असाधारण) सोमवार, 16मई, 2016

27

सरकार त्ारा ढदल िनदश का उलंघन ढकया है या ढवढीय कुढबंधन और कुशासन के ङथित ढवYढवढालय मल ऐसी हो गयी है ढक उसके अकादिमक ढतर पर ढु-िच खड़ा हो गया हो, तो सरकार एक ढशासक िनयु कर सकती है।

6) उप-धारा (5) के अंतगत िनयु ढशासक इस अधिनयम के तहत बनाये गये शासी िनकाय अथवा ढबंधन बोड के सारे कतलक िनवाहन करेगा और तब तक ढवYढवढालय के गितढविधय का संचालन करेगा जब तक िनयिमत पाढयढ के ढवढिथय का आखर सङ अपना पाढयढ पूरा नहं कर लेता और उढहल ढडिढेयँ या ढडढलोमा न दे द8 जायँ।

7) आखर सङ को ढडिढेयँ या ढडढलोमा या जैसी ङथित हो, के ढदान के बाद ढशासक इस आशय के ऱरपोट राँय सरकार को देगा।

8) उप-धारा (7) के अंतगत ऱरपोट ढाु होने पर राँय सरकार ढवYढवढालय को ढवढढट कर देगी और ढवYढवढालय के ढवढटन के बाद इसका सार पारसंपढयँ और देनदलरयँ ढवढक िनकाय मल िनढहत हो जाङगी।

अध्याय

44. नियम बनाने के लिए राय सरकार का शब्द:-

- 1) इस अधिनियम के उद्देश्य के निर्वहन के लिए शासकय राजपट्ट मण्डल अधिसूचना जारी करके राय सरकार नियम बनाएगी।
- 2) राय षवधानमंडल के समक्ष इस धारा के अंतर्गत बनाये गये सारे नियमों को कम से कम 30 दिनों के लिए रखा जाएगा और राय षवधानमंडल को यह अधिकार होगा कि वह इसका निरसन कर दे अथवा अपेक्षित परिवर्तन कर दे अथवा ऐसे परिवर्तन द्वारा षवधानमंडल के उसी सट्ट मण्डल या उसके ठीक बाद वाले सट्ट मण्डल में रखा गया हो।

45. षवर्धितय के पाठ्यक्रम का समापन:-

इस अधिनियम अथवा परिणियम मण्डल में किसी बात के होते हुए भी अंगीभूत महाषवर्धितलय अथवा षवर्धितलय का अनुसूची मण्डल में निविर्धित इस अधिनियम के लागू होने के तुरंत पहले कोई भी अधिनियम षवर्धितय या जो इस षवर्धितलय का किसी परीक्षा मण्डल में सम्मिलित होने का अधिकार था उसे अपना पाठ्यक्रम पूरा करने का अनुमित दया जाएगी और ऐसे षवर्धितय के षिष्य, षिष्य और परीक्षा का षिष्यमेदार संबद्ध षवर्धितलय पर तब तक होगी जैसा निविर्धित रखा गया हो।

28

झारखंड गजट (असाधारण) सोमवार, 16 मई, 2016

46. कठिनाई को दूर करने का शब्द:-

- 1) यदि इस अधिनियम के किसी षवधान को लागू करने मण्डल में कठिनाई उपस्थित हो रही हो तो शासकय राजपट्ट मण्डल में निविर्धित आदेश के द्वारा राय सरकार इस अधिनियम के षवधानों को षयान मण्डल रखते हुए कठिनाई को शीघ्र दूर करने के लिए आवश्यक कदम उठाएगी।

बशर्त इस अधिनियम के षारंभ के तीन वर्ष के बाद उप धारा (1) के अंतर्गत ऐसा कोई आदेश पारित नहय रखा जायगा।

- 2) इस अधिनियम के अंतर्गत पारित षयक आदेश को अवलंब राय षवधानमंडल के समक्ष रखा जायगा।

अनुसूची - ए (A)

- (1) एकल षभाव-क्षेत्र के लिए मुख्य परिसर मण्डल में कम से कम 10 एकड़ जमीन उपलब्ध कराना होगा और बहु षभाव क्षेत्र के लिए 25 एकड़, जो कि षवर्धितलय का षथापना के दो वर्ष के अंदर करना होगा। एककृत कक्ष मण्डल में षिष्यगृह, कैफेटेरिया, छात्रावास इत्यादि ऐसी सुवधायन हो सकती हय, अतः जमीन का आवश्यकता मण्डल तदनुसार बदलाव हो सकता है।
- (2) षयूनतम एक हजार वर्ग मीटर का षशासकय भवन, शैक्षिक भवन, षिष्यमण्डल पुस्तकालय, षयायान कक्ष, षयोगशाला हय वह अवतम 10 हजार वर्ग मीटर का हयगी, षिष्य के लिए पयाय आवासीय षयवस्था, अतिथि गृह, छात्रावास षिष्य षमशः इतना बढ़ाया जायगा कि षवर्धितय का कुल संख्या का कम से कम 25 प्रतिशत उसमण्डल रह सके, ऐसा अवतम मण्डल आने के तीन वर्ष के भीतर करना होगा। अगर षवर्धितलय षयावसायिक षिष्य का कायक्रम करता है तो उसके लिए वैधानिक षनकाय द्वारा रकये गये मानक तथा मानदंड को षवीकार करना होगा। राय सरकार द्वारा षनिर्धारित मानक के आधार पर षवमान संस्थान षवतार / पुनर्धार / पुनरचना करेगा।

झारखंड रायपाल के आदेश से,

दिनेश कुमार षिंह,

षिष्यनसिचव-

सह-षविध परामशक

षविध (षवधान)

षवभाग, झारखंड,

रांची।

अधिसूचना

13 मई, 2016

संख्या-एल0 जी0-09/2016-85/लेज0--झारखंड संवधान मंडल द्वारा यथापारित और रायपाल द्वारा
उदनांक

06 मई, 2016 को अनुमत **झारखंड इंटरनेशनल संवधानालय अधिनियम, 2016** का निम्नांकित अंग्रेजी अनुवाद
झारखंड रायपाल के अधिकार से इसके द्वारा प्रकाशित किया जाता है, उसे भारतीय संवधान के अनुच्छेद
348

के खंड (3) के अधीन उक्त अधिनियम का अंग्रेजी भाषा में अधिकृत पाठ समझा जायेगा।

THE PRAGYAN INTERNATIONAL UNIVERSITY ACT, 2016

(Jharkhand Act-11, 2016)

An Act to provide for the establishment and incorporation of the **PRAGYAN INTERNATIONAL**

UNIVERSITY in the State of Jharkhand, and to confer the status of a Private University thereon and

for matters connected therewith and incidental thereto;

WHEREAS it is expedient to provide for the establishment and incorporation of the **PRAGYAN INTERNATIONAL UNIVERSITY** at RANCHI, Jharkhand promoted by Pragyan Foundation, 40/2,

Rupchand Mukherjee Lane, Kolkata-700025, (Trust) created and registered under a public charitable

Trust formed under Indian Trust Act 1982, registered under Indian Registration Act, 1908 and to confer

the status of a Private University thereon and for the matters connected therewith and incidental thereto;

It is hereby enacted in the Sixty-seventh year of the Republic of India, by the Legislature of Jharkhand,

as follows:

1. Short Title, Extent and Commencement.

(1) This Act may be called "**PRAGYAN INTERNATIONAL UNIVERSITY ACT, 2016**".

(2) It shall extend to the whole of the State of Jharkhand.

(3) It shall come into force on such date as the State Government may, by notification in the

2. Definitions.

In this Act, unless the context otherwise requires:

(a) "Academic Council" means the Academic Council of the University as specified in section 24 of

the Act;

(b) "Annual Report" means the Annual report of the University as referred to in section 39 of the Act;

(c) "Board of Management" means the Board of Management of the University as constituted under

section 23 of the Act;

30

झारखंडगजट(असाधारण)सोमवार,16 मई,2016

(d) "Campus" means the area of the university in which it is established;

(e) "Chancellor" means the Chancellor of the University appointed under section 12 of the Act;

(f) "The Chief Finance and Accounts Officer" means the Chief Finance and Accounts Officer of the University appointed under section 18 of the Act;

(g) "Controller of Examinations" means the Controller of Examinations of the University appointed under section 19 of the Act;

(h) "Constituent College" means a college or an institution maintained by the University;

(i) "Employee" means employee appointed by the University; and includes teachers and others staff of the University or of a constituent college;

(j) "Endowment fund" means the endowment fund of the University established under section 37 of the Act;

(k) "Faculty" means group of academic departments of similar disciplines;

(l) "Fee" means collection made by the university from the students for the purpose of any course of study and incidental thereto, in the University;

(m) "General Fund" means the General fund of the University established under section 38 of the Act;

(n) "Governing Body" means the Governing Body of the University constituted under section 22 of the Act;

(o) "National Assessment and Accreditation Council" means National Assessment and Accreditation Council, Bengaluru, an autonomous institution of the University Grants Commission;

(p) "Prescribed" means prescribed by the Statutes and the rules made under this Act;

(q) "Pro Vice-Chancellor" means the Pro Vice-Chancellor of the University appointed under section 15 of the Act;

(r) "Registrar" means the Registrar of the University appointed under section 17 of the Act;

(s) "Regulatory Body" means a body established by the Government of India for laying down norms and conditions for ensuring academic standards of higher education, such as University Grants Commission, All India Council for Technical Education, National Council for Teacher Education, Medical Council of India, Bar Council of India, Pharmacy Council of India, National Assessment and Accreditation Council, Indian Nursing Council, Indian Council of Agriculture Research, Council of Scientific and Industrial Research, etc. and includes the Government or any

झारखंडगजट(असाधारण) सोमवार,16मई,2016

such body constituted by the Government of India or the State Government;

(t) "Rules" means the rule of the University made under this Act;

(u) "Schedule" means schedule appended to this Act;

(v) "Sponsoring Body" in relation to the university means (i) a society registered under Societies Registration Act 1860, or (ii) a public trust registered under Indian Trust Act 1882, or (iii) a society or trust registered under the law of any other State;

(w) "State Government" means the State Government of Jharkhand;

- (x) "Statutes", "Ordinances", and "Regulations" mean respectively, the Statutes, Ordinances and Regulations of the University made under this Act;
- (y) "Student of the university" means a person enrolled in the university for taking a course of study for a degree, diploma, or other academic distinction duly instituted by the university, including a research degree;
- (z) "Teacher" means a Professor, Associate Professor, Assistant Professor or such of the other person as may be appointed for imparting instruction or conducting research in the University or in a Constituent College or Institution and includes the Principal of a Constituent College or institution, in conformity with the norms prescribed by the University Grants Commission; (aa) "University Grants Commission" means the University Grants Commission established under the University Grants Commission Act, 1956;
- (ab) "University" means the **PRAGYAN INTERNATIONAL UNIVERSITY**, Jharkhand established under this Act.

(ac) "Vice-Chancellor" means the Vice-Chancellor of the University appointed under section 13 of the Act;

(ad) "Visitor" means the Visitor of the University referred to in section 10 of the Act.

3. Establishment of University.

(1) There shall be established the University by the name '**PRAGYANINTERNATIONAL UNIVERSITY**'

(2) The headquarters of the University shall be within the State of Jharkhand and shall be situated at Ranchi.

32 झारखंडगजट(असाधारण)सोमवार,16 मई,2016

(3) The University shall start operation only after the State Government issues the letter of

authorization.

(4) The university shall meet the conditions mentioned in the schedule A of the Act within

the stipulated time.

(5) The Governing Body, the Board of Management, the Academic Council, the Chancellor,

the Vice Chancellor, the Pro Vice Chancellor, the Registrar, the Teachers, the Chief

Finance and Accounts Officer and such other officers or members or authorities so long

as they continue to hold such office or membership of the University hereby constitute a

body corporate by the name of the University.

(6) The University shall function as non-affiliating University and they shall not affiliate any

other college or institute for the conferment of degree, diploma and for grant of

certificate to the students admitted therein.

- (7) The constituent colleges and institutions of the Sponsoring Body affiliated to and

enjoying the privileges of any University immediately before the commencement of this

Act shall cease to be affiliated from that University and shall be deemed to be withdrawn

from such privileges from the date of commencement of this Act and shall be deemed to

be admitted to the privileges of **PRAGYANINTERNATIONAL UNIVERSITY**.

University of the Sponsoring Body and all such colleges and institutions shall be the

constituent colleges and institutions of **PRAGYAN INTERNATIONAL**

UNIVERSITY.

- (8) The University shall be a body corporate by the name '**PRAGYAN INTERNATIONAL**

UNIVERSITY' and will have perpetual succession and common seal with power,

subject to the provisions of this Act, to acquire and hold property, to contract and shall,

by the said name, sue or be sued.

- (9) The University shall not receive any grant-in-aid or other financial assistance from the

State Government or the Central Government.

Provided that, the State Government or the Central Government may provide

financial support, including through grants or otherwise

(a) for research, development and other activities for which other State Government

organizations are provided financial assistance, or

(b) for any specific research or programme based activity.

4. **Properties of the University and its Application.**

- (1) On the establishment of the University the land and other movable and immovable

properties acquired, created, arranged, or built by the University for the purpose of the

University in the State of Jharkhand shall vest in the University.

झारखंडगजट(असाधारण) सोमवार, 16 मई, 2016

33

- (2) The land, building and other properties acquired for the University shall not be used for any purpose other than that for which the same is acquired.

- (3) The properties, movable or immovable, of the university shall be administered by the Governing Body in such manner as may be provided for by the regulations.
- (4) The properties in the name of the university under sub-section (1) shall be applied for meeting the liabilities of the university in the event of dissolution or winding up of the university in such manner as may be prescribed in the rules.

5. Restrictions and obligations of the University.

- (1) The tuition fees for professional courses such as Engineering & Technology, Medicine, Management, etc., in the university shall be determined by the University under the supervision of the regulatory body notified by the State Government from time to time.
- (2) Admission in the University shall be strictly on the basis of merit. Merit for admission in the University may be determined either on the basis of marks or grade obtained in the qualifying examination and achievements in co-curricular and extra-curricular activities or on the basis of marks or grade obtained in the entrance test conducted at State level either by the University or an association of the Universities conducting similar courses or by any agency of the State Government.

Provided that the admission in professional educational colleges or institutions of the University shall be governed under the provisions of the Regulatory Bodies.

- (3) The university shall allow merit scholarship to at least five percent of the total strength, to the students belonging to poor and economically backward classes. The relevant criteria for determining the poor and economically backward classes shall be such as may be determined by the State Government from time to time.
- (4) The university shall compulsorily make provisions for reservation of seats for the students domiciled in the State of Jharkhand to the extent of at least twenty five percent of the total students in the university. The reservation of seats shall be regulated by the laws and orders of the State Government from time to time.
- (5) The university shall make provisions for reservation of non-teaching posts in the university for the persons domiciled in the State of Jharkhand to the extent of at least fifty percent of the total number of non-teaching posts of the university. The reservation of seats shall be regulated by the laws and orders of the State Government from time to time.

34

झारखंडगजट(असाधारण)सोमवार,16 मई,2016

- (6) The university shall appoint adequate number of teachers and officers in the University for maintaining the academic standards specified and shall ensure that the qualifications of such teachers or officers of the university shall not be lower than prescribed by the relevant Regulatory Bodies.
- (7) The university shall compulsorily place in the public domain every information in relation to the University which would be of interest to the students and other stakeholders *inter alia*, including the courses offered, number of seats under different categories, fees and other charges, facilities and amenities offered, faculty in place and such other relevant information.
- (8) The Convocations of the University may, for conferring degrees, diplomas or for any other purpose, be held in every academic year in the manner as may be prescribed by the Statutes.

(9) The University shall obtain accreditation from the National Council of Assessment and Accreditation (NAAC) within five years of its establishment and such other regulating bodies of Government of India which are connected with the courses taken up by the University and inform the State Government about the grade provided to the University. The University shall get renewed such accreditation from time to time.

(10) Notwithstanding anything contained in this Act, the University shall be bound to comply the conditions mentioned in Schedule A of this Act, and all the rules, regulations, norms, etc. of the regulating bodies of Government of India and State Government and provide all such facilities and assistance to such bodies as are required by them to discharge their duties and carry out their functions.

6. Objects of the University.

The objects of the University shall be to disseminate and advance knowledge and skill by providing instructional, research and extension of facilities and in such branches of learning as it may deem fit and the University shall endeavour to provide to students and teachers the necessary atmosphere and facilities for the promotion of:

- (a) Innovations in education leading to restructuring of courses, new methods of teaching, training, and learning including online learning, blended learning, continuing education and such other modes and integrated and wholesome development of personality;
- (b) Studies in various disciplines;
- (c) Inter disciplinary studies;
- (d) National integration, secularism and social equity and International understanding and ethics.

झारखंड गजट (असाधारण) सोमवार, 16 मई, 2016

35

7. University open to all irrespective of sex, religion, class, colour, creed, or opinion.

No person shall be discriminated against or be excluded from any office of the university or from membership of any of its authorities or from admission to any course of study leading to a degree, diploma or other academic distinction on the grounds of sex, race, creed, class, caste, place of birth and religious belief or political or other opinion.

8. Powers and functions of the University.

- (i) To administer and manage the University, establish, administer and manage its constituent colleges and centres for research, education, training, extension and outreach including continuing education, distance learning and e-learning at its campus within the State of Jharkhand;
- (ii) To provide for research, higher education, professional education, teaching training, extension and outreach including continuing education, distance learning and e-learning in the fields of science, technology, humanities, social sciences, education, management, commerce, law, pharmacy, healthcare and any other fields;
- (iii) To conduct innovative experiments in educational technologies, teaching and learning methods, to collaborate with national and international institutions and to offer joint programmes with such institutes to constantly improve the delivery of education and to achieve international standards of education;

- (iv) To prescribe courses, curricula and methodologies including electronic and distance learning and provide for flexibility in the delivery of education.
- (v) To hold examination and confer degree, diploma or grant certificate and other academic distinctions or title on persons subject to such condition as the University may determine and to withdraw or cancel any such degree, diploma or certificates and other academic distinction or titles in the manner prescribed by the Regulations;
- (vi) to institute and award fellowships, scholarships, medals and prizes;
- (vii) to confer honorary degrees or other distinction on the manner prescribed by the Statutes; (viii) to establish schools, centres, institutes, college and conduct the programme and courses of study as are in the opinion of the University, necessary for the furtherance of its objects; (ix) To declare as a constituent college any college, centre, institution imparting education as are in the opinion on the University necessary for the furtherance of its objects or to establish a new constituent college, centre, institution for the purpose;
- (x) To provide for printing, publication and reproduction of research, educational material and other works and to organize exhibitions, conferences, workshops and seminars;
- (xi) To establish knowledge resource centre;
- (xii) To sponsor and undertake research and educational programmes in the fields of science,

36

झारखंड गजट (असाधारण) सोमवार, 16 मई, 2016

- technology, humanities, social sciences, education, management, commerce, law, pharmacy, healthcare and any other allied areas;
- (xiii) To collaborate or associate with any educational institution with like or similar objects; (xiv) To establish campuses including virtual campus for the purpose of achieving the objectives of the University;
- (xv) To undertake research and to obtain registration in respect of such research in the nature of patents, design rights and such or similar rights with the competent authorities;
- (xvi) To maintain linkages and collaborate with educational or other institutions in any part of the world having objects wholly or partially similar to those of the University, through exchange of students, researchers, faculty and staff and generally in such manner as may be conducive to their common objects;
- (xvii) To render services of research, training, consultancy and such other services as required for the purposes of the University;
- (xviii) To develop and maintain relationships with faculty, researchers, administrators and domain experts in science, technology, humanities, social sciences, education, management, law, commerce, pharmacy, healthcare and allied area for achieving the objects of the University; (xix) to make special arrangement in respect to women and other disadvantaged students as the University may consider desirable;
- (xx) To regulate the expenditure and to manage the finances and to maintain the accounts of the University;
- (xxi) To receive funds, movable and immovable properties, equipments, software and other resources from business, industry, other sections of society, national and international organization or any other source by transfers or as gifts, donations, benefactions or bequests for the purposes and objects of the University;
- (xxii) To establish, maintain and manage halls, hostels for students and quarters for

- the residence of faculty and staff;
- (xxiii) To construct, manage and maintain centres, complexes, auditorium, buildings, stadium for the advancement of sports, cultural, co-curricular and extra-curricular activities;
- (xxiv) To supervise and control the residence and regulate the discipline of students, faculty and staff of the University and to make arrangements for promoting their health, general welfare, social and cultural activities;
- (xxv) To fix, demand and receive or recover fees and such other charges as may be prescribed by the Statutes;
- (xxvi) To institute and award fellowships, scholarships, prizes, medals and other awards;
- (xxvii) To purchase or to take on lease or accept as gifts, bequests, legacies or otherwise any land or building or works which may be necessary or convenient for the purpose of the University

झारखंड गजट (असाधारण) सोमवार, 16 मई, 2016

37

- and on such terms and conditions as it may think fit and proper and to construct or alter and maintain any such building or works;
- (xxviii) To sell, exchange, lease or otherwise dispose of all or any portion of the properties of the University, movable or immovable, on such terms as it may think fit and consistent with the interest, activities and objects of the University;
- (xxix) To draw and accept, to make and endorse, to discount and negotiate promissory notes, bills of exchange, cheques and other negotiable instruments;
- (xxx) To raise and borrow money on bond, mortgages, promissory notes or other obligations or securities founded or based upon all or any of the properties and assets of the University or without any securities and upon such terms and conditions as it may think fit and to pay all expenses out of the funds of the University.

9. Bar to affiliation.

- (1) The University shall not admit any college or institution to the privilege of affiliation.
- (2) The University may open any off campus, offshore campus, and study centre, examination centre in or out of the State of Jharkhand only after the prior approval of University Grants Commission or such regulatory body established by the Government or State or Central Government, as the case may be.
- (3) Courses under Distance mode can be started only after the prior approval of University Grants Commission or such regulatory body established by the Government.

10. The Visitor.

- (1) The Governor of Jharkhand will be the Visitor of the University
- (2) The Visitor shall, when present, preside at the convocation of the University for Conferring Degrees, Diplomas, charters, Designation and certificates.
- (3) The Visitor shall have the right to visit the University or any institution maintained by the University to ensure the standard of education, discipline, decorum and proper functioning of the university.

11. Officers of the University.

The following shall be the officers of the University:

- (a)The Chancellor
- (b)The Vice
Chancellor
- (c)The Pro Vice
Chancellor

38

झारखंडगजट(असाधारण)सोमवार,16 मई,2016

- (d)Director/Principal
- (e)The Registrar
- (f)The Chief Finance and Accounts Officer
- (g)The Controller of Examinations
- (h)The Dean of Students Welfare
- (i)The Dean of Faculty
- (j)The Proctor, and
- (k)Such other officers as may be declared by the Statute to the officers of the University.

12. The Chancellor:

- (1) The Chancellor shall be appointed by the Sponsoring Body for a period of five years with
the approval of the Visitor by following such procedures and on such terms and conditions as may be prescribed. On the expiry of the term, the Chancellor may be reappointed by the Sponsoring Body in consultation with the Visitor.
- (2) The Chancellor by virtue of his office shall be the head of the University.
- (3) The Chancellor shall preside over the meetings of the Governing Body and shall, when
the Visitor is not present, preside over the convocation of the University for conferring
degrees, diplomas, or other academic distinctions.
- (4) The Chancellor may in writing under his hand addressed to the head of the sponsoring
body resign his office.
- (5) The Chancellor shall have the following powers, namely:
 - (a) to call for any information or record;
 - (b) to appoint the Vice Chancellor;
 - (c) to remove the Vice Chancellor in accordance with the provisions of this Act; and
 - (d) such other powers as may be conferred on him by this Act or Statutes made

thereunder.

13. The Vice Chancellor:

(1) The Vice Chancellor shall be appointed by the Chancellor as per the qualifications

prescribed by the University Grants Commission and shall hold office for a period of five

years .Provided that a person appointed as Vice Chancellor shall retire from office during

tenure of his office or extension thereof, if any when he completes the age of 70 years.

झारखंडगजट(असाधारण) सोमवार, 16 मई, 2016

39

Provided further that after the expiry of the term of five years, the Vice

Chancellor shall be eligible for re-appointment for another term of five years.

(2) The Vice Chancellor shall be the principal executive and academic officer of the University and shall exercise general superintendence and control over the affairs of the

university and shall execute the decisions of various authorities of the university.

(3) In the absence of both the Visitor and the Chancellor, the Vice Chancellor shall preside

over the convocation of the university.

(4) The Vice Chancellor may, if he/she is of the opinion that immediate action is necessary

on any matter, exercise any power conferred on any authority of the University by or

under this Act and shall convey to such authority the action taken by him on such matters;

Provided that if the authority of the University or any person in the service of the

University who is aggrieved by the action taken by the Vice Chancellor under this sub

section may prefer an appeal to the Chancellor within one month from the date of communication of such decision. The Chancellor may confirm, modify or reverse action

taken by the Vice Chancellor.

(5) The Vice Chancellor shall exercise such powers and perform such other functions as may

be prescribed.

14. Removal of the Vice Chancellor.

(1) If at any time and after such inquiry as may be considered necessary, it appears to the

Chancellor that the Vice Chancellor:

- (a) has failed to discharge any duty imposed upon him by or under this Act, the Statutes, the Ordinances, or
- (b) has acted in a manner prejudicial to the interests of the university, or
- (c) is incapable of managing the affairs of the university, then the Chancellor may, notwithstanding the fact that the term of office of the Vice Chancellor has not expired, require the Vice Chancellor, by an order in writing stating the reason therefor, to resign his post from the date as may be specified in the order.

- (2) No orders under sub –section (1) shall be passed unless a notice stating the specific grounds on which such action is proposed , has been served and a reasonable opportunity to show cause against the proposed order has been given to the Vice Chancellor.

40

झारखंडगजट(असाधारण)सोमवार,16 मई,2016

15. The Pro Vice-Chancellor:

- (1) The Pro Vice-Chancellor shall be appointed by the Chancellor in such manner and shall

exercise such powers and perform such functions as may be prescribed.

- (2) The Pro Vice-Chancellor appointed under sub section (1) shall discharge his duties in

addition to his duties as a Professor.

- (3) The Pro Vice-Chancellor shall assist the Vice-Chancellor in discharging his duties as and

when required by the Vice-Chancellor.

- (4) The Pro Vice-Chancellor shall get honorarium of such amount as may be determined by

the sponsoring body.

16. Director(s)/Principal(s):

The Director/Principal shall be appointed in such manner and shall exercise such powers

and perform such functions as may be prescribed.

17. Registrar:

- (1) The Registrar shall be appointed by the Chairperson of the Sponsoring Body in such manner, as

may be specified in the Statutes. The Registrar shall possess the qualifications prescribed by the

University Grants Commission.

- (2) The Registrar shall have the power to enter into agreements, sign documents and authenticate

records on behalf of the University and shall exercise such other power and perform such other

functions as may be prescribed.

- (3) The Registrar shall be the ex officio Member Secretary of the Executive Council and the

Academic Council but shall not have a right to vote.

18. The Chief Finance and Accounts Officer:

- (1) The appointment of the Chief Finance and Accounts Officer shall be made by the

Chairperson of the Sponsoring Body in such manner as may be specified by the Statutes.

- (2) The Chief Finance and Accounts Officer shall exercise such powers and perform such

duties as may be specified by the Statutes.

19. The Controller of Examinations:

- (1) The Controller of Examinations shall be whole time officer of the university and shall be

appointed by the Chancellor in accordance with the Statutes.

झारखंडगजट(असाधारण) सोमवार, 16 मई, 2016

41

- (2) it shall be the duty of the Controller of Examinations:

(a) to conduct examinations in a disciplined and efficient manner;

(b) to arrange for the setting of question papers with strict regards to secrecy;

(c) to arrange for the evaluation of answer sheets in accordance with the planned time

schedule for results;

(d) to constantly review the system of examinations in order to enhance the level of

impartiality and objectivity with a view to make it better instrument for assessing the

attainments of students;

(e) to deal with any other matter connected with examinations which may, from time

to time be assigned to him by the Vice Chancellor.

20. Other Officers: Manner of appointment and power and duties of the other officers of the University including the Dean of Students Welfare, Dean of faculty, and Chief Proctor shall be

such as may be prescribed.

21. Authorities of the University:

The following shall be the authorities of the University:

- (a) The Governing Body
- (b) The Board of Management
- (c) The Academic Council
- (d) The Finance Committee
- (e) The Planning Board
- (f) Such other authorities as may be declared by the Statute to be the authorities of the

University.

22. The Governing Body:

(1) The Governing Body shall have the following members, namely:

- (a) the Chancellor;
- (b) the Vice-Chancellor;
- (c) the Secretary to the Government, Department of Higher and Technical Education, Jharkhand, or his nominee;

42

झारखंड गजट (असाधारण) सोमवार, 16 मई, 2016

(d) five persons nominated by the sponsoring body, out of which two shall be eminent

educationists;

(e) one expert of management or technology from outside the university, nominated by the

Chancellor; and

(f) one expert of finance, nominated by the Chancellor.

(2) The Governing Body shall be the supreme authority and principal governing body of the

University. It shall have the following powers, namely:

- (a) to provide general superintendence and directions and to control the functioning of the university by using all such powers as are provided by this Act, Statutes, Ordinances, Regulations or Rules;
- (b) to review the decisions of other authorities of the university in case they are not in conformity with the provisions of Act, Statutes, Ordinances, Regulations or Rules;
- (c) to approve the budget and annual report of the university;
- (d) to lay down the extensive policies to be followed by the university;
- (e) to recommend to the sponsoring body for the dissolution of the university if a situation arises when there is no smooth functioning of the university in spite of best efforts; and
- (f) such other powers as may be specified by the Statutes.

(3) The Governing Body shall meet at least three times in a calendar year.

(4) The quorum of the meeting shall be four;

Provided that the Secretary to the Government, Department of Higher and Technical

Education, Jharkhand, or in his absence, Director, Higher Education shall be present in each

meeting in which decisions on issues involving Government policies/ instructions are to be taken.

23. The Board of Management.

- (1) The Board of Management shall consist of the following members, namely:
 - (a) the Vice-Chancellor;
 - (b) the Secretary to the Government, Department of Higher and Technical Education, Jharkhand or his nominee;
 - (c) two members of the Governing Body, nominated by the sponsoring body;
 - (d) three persons, who are not the members of the Governing Body, nominated by the sponsoring body;
 - (e) three persons, from amongst the teachers, nominated by the sponsoring body;
 - (f) two teachers, nominated by the Vice Chancellor.
- (2) The Vice Chancellor shall be the Chairperson of the Board of Management.

झारखंडगजट(असाधारण) सोमवार, 16 मई, 2016

(3) The powers and functions of the Board of Management shall be such as may be specified

by the Statutes.

(4) The quorum for the meeting of the Board of Management shall be five;

Provided that the Secretary to the Government, Department of Higher and Technical Education, Jharkhand, or in his absence, Director, Higher Education shall be

present in each meeting in which decisions on issues involving Government policies/

instructions are to be taken.

24. The Academic Council.

(1) The Academic Council shall consist of the Vice Chancellor and such members as may be

specified by the Statutes.

(2) The Vice Chancellor shall be the Chairperson of the Academic Council.

(3) The Academic Council shall be the principal academic body of the university and shall,

subject to the provisions of this Act, Statutes, Ordinances, Regulations or Rules, coordinate and exercise general supervision over the academic policies of the university.

(4) The quorum for meetings of the Academic Council shall be such as may be specified by

the Statutes.

25. The Finance Committee.

(1) The Finance Committee shall be the principal financial body of the University to take

care of the financial matters.

(2) The constitution, powers and functions of the Finance Committee shall be such as may be

prescribed

44

झारखंड गजट (असाधारण) सोमवार, 16 मई, 2016

26. The Planning Board.

(1) The Planning Board shall be the principal planning body of the University and shall

ensure that the infrastructure and academic support system meets the norms of the

University Grants Commission or the respective Councils.

(2) The constitution of the planning board, term of office of its members and its power and

functions shall be such as may be prescribed.

27. Other Authorities.

The constitution, powers and functions of other authorities of the University, shall be

such as may be prescribed.

28. Disqualification for membership of an authority or body.

A person shall be disqualified from being a member of any of the authorities or bodies of

the university, if he/she:

(a) is of unsound mind and stands so declared by a competent court;

(b) is an undischarged insolvent;

(c) has been convicted of any offence involving moral turpitude;

(d) has been punished for indulging or in promoting unfair practice in the conduct of any

examination, in any form, anywhere.

29. Vacancies not to invalidate the constitution of, or the proceedings of any authority or body

of university.

No act or proceedings of any authority of the University shall be invalid merely by

reason of any vacancy in or defect in the constitution of any authority or body of the University.

30. Constitution of Committees.

The authorities of the University may constitute such committee with such terms of

reference as may be necessary for specific tasks to be performed shall be such as may be

prescribed by the Statutes.

STATUTES, ORDINANCE AND REGULATIONS**31. First Statute.**

(1) Subject to the provisions of this Act, and the rules made thereunder, the First Statutes may

provide for all or any of the following matters, namely:

झारखंडगजट(असाधारण) सोमवार, 16 मई, 2016

45

(a) the constitution, powers and functions of the authorities and other bodies of the University as maybe constituted from time to time;

(b) the terms and conditions of appointment of the Chancellor, the Vice Chancellor and their powers and functions;

(c) the manner and terms and conditions of appointment of the Registrar and Chief Finance and Accounts Officer, their powers and functions;

- (d) the manner and terms and conditions of appointment of other officers and teachers and their powers and functions;
 - (e) the terms and conditions of service of employees of the University;
 - (f) the procedure for arbitration in cases of disputes between employees or students and the University;
 - (g) the conferment of honorary degrees;
 - (h) the provisions regarding exemption from payment of tuition fee and awarding scholarships and fellowships to the students;
 - (i) framing of policy for admission, including regulation of reservation of seats; and
 - (j) fees to be charged from students.
- (2) The First Statutes of the University shall be made by the Governing Body and shall be submitted to the State Government for its approval.
- (3) The State Government shall consider the First Statutes, submitted by the University and shall approve it within sixty days from the date of its receipt, with or without modifications as it may deem necessary.
- (4) The University shall communicate its agreement to the First Statutes as approved by the State Government, and if it desires not to give effect to any or all the modifications made by the State Government under sub-section (3), it may give reasons therefore and after considering such reason, the State Government may or may not accept the suggestions made by the University.
- (5) The State Government shall publish the First Statutes, as finally approved by it, in the Official Gazette, and thereafter it shall come into force from the date of such publication.

32. Subsequent Statutes.

- (1) Subject to the provisions of this Act and the rules made thereafter, the subsequent Statutes of the University may provide for all or any of the following matters, namely:-

46

झारखंड गजट (असाधारण) सोमवार, 16 मई, 2016

- (a) Creation of new authorities of the University;
 - (b) Accounting policy and financial procedure;
 - (c) Representation of teachers in the authorities of the University;
 - (d) Creation of new departments and abolition or restructuring of existing departments;
 - (e) Institution of medals and prizes;
 - (f) Procedure for creation and abolition of posts;
 - (g) Revision of fees;
 - (h) Alteration of the number of seats in different disciplines; and
 - (i) All other matters which by or under the provision of this Act required to be prescribed by the Statutes.
- (2) The Statutes of the University other than the First Statutes shall be made by the Board of Management with the approval of the Governing Body.
- (3) The Statutes made under sub-section (2) shall be submitted to the State Government and it may approve or, if considers necessary, give suggestions for modification as far as possible within two months from the date of receipt of the Statutes.

(4) The Governing Body shall consider the modifications suggested by the State Government and return the Statutes to it with its agreement to such changes or with its comments on the suggestions made by the State Government.

(5) The State Government shall consider the comments of the Government Body and may approve the Statutes with or without modifications and it shall be published by it in the Official Gazette, and shall come into force from the date of such publication.

33. First Ordinance.

(1) Subject to the provisions of this Act, the rules and the Statutes made thereunder, the First Ordinances may provide for all or any of the following matter, namely :-

- (a) The admission of students to the University and their enrolment as such;
- (b) The courses of study to be laid down for degrees, diplomas and certificates of the University;

झारखंडगजट(असाधारण) सोमवार, 16 मई, 2016

47

- (c) The award of degrees, diplomas, certificates and other academic distinctions, the minimum qualifications for the same;
- (d) The conditions for award of fellowships, scholarships, stipends, medals and prizes;
- (e) The conduct of examinations, including the terms of office and manner of appointment and the duties of examining bodies examiners and moderators;
- (f) Fees to be charged for the various courses examinations, degrees or diplomas of the University;
- (g) The conditions of residence of the students of the University;
- (h) Provision regarding disciplinary action against the students;
- (i) The creation, composition and functions of any other body which is considered necessary for improving the academic life of the University;
- (j) The manner of co-operation and collaboration with other Universities and institutions of higher education;
- (k) Such other matters which are required to be provided by the Ordinances by or under this Act.

(2) The First Ordinances of University shall be made by the Chancellor which after being

approved by the Board of Management, shall be submitted to the State Government for its

approval.

(3) The State Government shall consider the First Ordinance submitted by the Chancellor

under sub-section (2) within sixty days from the date of its receipt and may approve it or

give suggestions for modifications therein.

- (4) The Chancellor shall either modify the Ordinances incorporating the suggestion of the

State Government or give reasons for not incorporating any of the suggestions made by the

State Government and shall return the First Ordinances along with such reasons, if any, to

the State Government and on receipt of the same, it shall consider the comments of the

Chancellor and may approve the First Ordinances of the University with or without such

and it shall come into force from the date of such publication.

48

झारखंडगजट(असाधारण)सोमवार,16 मई,2016

34. Subsequent Ordinances.

- (1) All Ordinances other than the First Ordinances shall be made by the Academic Council which after being approved by the Governing Body shall be submitted to the State Government for its approval.
- (2) The State Government shall consider the Ordinances submitted by the Academic Council under sub-section (1) as far as possible within two months from the date of its receipt and may approve it or give suggestions for modifications therein.
- (3) The Academic Council shall either modify the Ordinances incorporating the suggestion of the State Government or give reasons for not incorporating any of the suggestions made by the State Government and shall return the Ordinances along with reason, if any, to the State Government and on receipt of the same, it shall consider the comments of the Academic Council and may approve the Ordinances with or without modifications and it shall be published by it in the Official Gazette, and shall come into force from the date of such publication.

35. Regulations.

The authorities of the University may, subject to the prior approval of the Governing Body make Regulation, consistent with this Act, the Statutes and the Ordinances made thereunder, for the conduct of business of the each such authority and committee constituted by each such authority.

36. Powers of State Government to give directions.

- (1) The State Government may, for the purpose of ascertaining the standards of teaching, examination and research or any other matter relating to the University, cause an assessment to be made in such manner as may be prescribed, by such person or persons as it may deem fit.
- (2) The State Government shall communicate its recommendations to the University on the basis of such assessment for corrective action. The

University may adopt such corrective measures and make efforts so as to ensure the compliance of the recommendations.

(3) The State Government may give such directions as it may deem fit if the University fails to comply with the recommendation made under sub-section(2) within a reasonable time. The directions given by the State Government shall be immediately complied by the University.

झारखंडगजट(असाधारण) सोमवार, 16 मई, 2016

49

FUNDS OF UNIVERSITY

37. Endowment Fund.

- (1) The sponsoring body shall establish an Endowment Fund for the university with an amount specified in the Letter of Intent.
- (2) The Endowment Fund shall be used as security deposit to ensure that the university complies with the provisions of this Act and functions as per the provisions of this Act, the Statutes and the Ordinances. The State Government shall have the power to forfeit, a part or whole of the Endowment Fund in case the university or the sponsoring body contravenes the provisions of this Act, Statutes, the Ordinances, the regulations or the rules made there under.
- (3) The university may utilize the income from the Endowment Fund for the development of infrastructure of the university and not to meet the recurring expenditure of the university.
- (4) The amount of Endowment Fund shall be invested in such instruments as the Government may prescribe and kept invested until the dissolution of the university.
- (5) In case of investment in long term security, the certificates of the securities shall be kept in the safe custody of the Government and in case of deposit in the interest bearing Personal Deposit account in the Government Treasury, deposit shall be made with the condition that the amount shall not be withdrawn without the permission of the Government.

38. General Fund.

(1) The university shall establish a fund, which shall be called the General Fund to which the following shall be credited, namely:

- (a) Fees and other charges received by the university;
- (b) Any contribution made by the sponsoring body;
- (c) Any income received from consultancy and other work undertaken by the university in pursuance of its objective;
- (d) Trusts, bequests, donations, endowments and any other grants; and
- (e) All other sums received by the university.

(2) The General Fund shall be utilized for the following objects, namely:

50

झारखंडगजट(असाधारण) सोमवार, 16 मई, 2016

(a) For the repayment of debts including interest charges thereto incurred by the

university for the purposes of this Act and the Statutes, the Ordinances, the Regulations, and the Rules made there under with the prior approval of the Governing Body;

- (b) To upkeep the assets of the university;
- (c) For the payment of the fee for audit of the funds created under sections 7 and 8.
- (d) To meet with the expenses of any suit or proceedings by or against the university;
- (e) For the payment of salaries, allowances, provident fund contributions, gratuity

and other benefits to officers, employees, and members of the teaching and research staff;

- (f) For the payment of travelling and other allowances of the members of the

Governing Body, the Executive Council, the Academic Council, other authorities and the members of any committee appointed by any of the authority or the Chairperson of the sponsoring body or the Chancellor;

- (g) For the payment of fellowships, freeships, scholarships, assistantships and other

awards to the students belonging to economically weaker sections of the society or research associates, trainees or, as the case may be, in any student otherwise eligible for such awards under the Statutes, the Ordinances, the Regulations or the Rules;

- (h) For the payment of any expenses incurred by the university in carrying out the

provisions of Act, Statutes, the Ordinances, the regulations or the Rules;

- (i) for the payment of cost of capital, not exceeding the prime lending rate from time

to time of the State Bank of India, incurred by the sponsoring body for setting up the university and the investments made therefore;

- (j) for the payment of charges and expenditure relating to the consultancy work

undertaken by the university in pursuance of this Act, Statutes, the Ordinances, the regulations or the rules;

- (k) for the payment of any other expenses including service fee payable to any

organization charged with the responsibility of providing any specific service, including the managerial services to the university, on behalf of the sponsoring body, as approved by the Governing Body to be an expense for the purposes of the university;

झारखंडगजट(असाधारण) सोमवार, 16 मई, 2016

Provided that no expenditure shall be incurred by the university in excess of the limits for total recurring expenditure and total non-recurring expenditure for the year, as may be fixed by the Governing Body, without prior approval of the Governing Body.

ACCOUNTS, AUDIT AND ANNUAL REPORT

39. Annual Report.

The Annual Report of the University shall be prepared by the University which shall include among other matters, the steps taken by the University towards the fulfillment of its objects and shall be submitted to the State Government.

40. Audit and Annual Accounts.

- (1) The annual accounts including balance sheet of the University shall be prepared by the University and the annual accounts shall be audited at least once in every year by the auditors appointed by the University for this purpose.
- (2) A copy of the annual accounts together with the audit report shall be submitted to the State Government.

WINDING UP OF UNIVERSITY

41. Winding up of University.

- (1) If the sponsoring body proposes to dissolve itself according to the provisions of law governing its constitution or incorporation; it shall give at least six months prior notice to the State Government.
- (2) The State Government shall, on receipt of such notice make such arrangements as may be necessary, for the administration of the University from the date of dissolution of the sponsoring body till the completion of syllabus by the last batch of students admitted to the University and may also cause the functioning of the University to continue by appointing an administrator in place of the sponsoring body, who shall be entrusted with the powers, duties and functions of the Sponsoring body, duties and functions of the Sponsoring Body as prescribed under this Act.

42. Dissolution of University.

- (1) The Sponsoring Body who intends to dissolve the University shall give a notice to that effect in the prescribed manner to the State Government. The State Government, after due consideration, may dissolve the University in the manner as may be prescribed;

52

झारखंडगजट(असाधारण)सोमवार,16 मई,2016

Provided that the dissolution of the University shall have effect only after the last batches of students of the regular courses have completed their courses and they have been awarded degrees, diplomas or, as the case may be, awards.

- (2) On the dissolution of the University all the assets and liabilities of the University shall vest in the Sponsoring Body in the manner as may be prescribed.
- (3) Where the State Government decides under sub-section (1) to dissolve the University, it may vest the powers of the Governing Body in the prescribed manner to other societies having similar objects till the dissolution of the University takes effect under the proviso to sub-section (1).

43. Special powers of State Government under certain circumstances.

(1) Where the State Government is of the opinion that the University has contravened any of the provisions of this Act, the Rules, the Statutes or the Ordinances made thereunder or has violated any of the direction issued by it under this Act or a situation of financial mismanagement or mal-administration has arisen in the University, it shall issue the notice requiring the University to show cause within forty-five days as to why an administrator be not appointed.

(2) On receipt of reply of the University on the notice issued under sub-section (1), if the State Government is satisfied that there is a prima facie case of contravention of any of the provision of this Act, the Rules, the Statutes or the Ordinances made thereunder or violation of directions issued by it under this Act or there is financial mismanagement or maladministration, it shall make an order of such inquiry as it may consider necessary.

(3) The State Government shall, for the purposes of any such inquiry under sub-section (2), appoint an inquiry officer or officers to inquire into any of the allegations and to make report thereon.

(4) The inquiry officer or officers appointed under sub-section (3) shall have the same powers as are vested in a Civil Court under the Code of Civil Procedure, 1908 while trying a suit in respect of the following matters, namely :-

- (a) Summoning and enforcing the attendance of any person and examining him on oath;
- (b) Requiring the discovery and production of any such document or any other material as may be predicable in evidence;
- (c) Requisitioning any public record from any court or office.

झारखंडगजट(असाधारण) सोमवार, 16 मई, 2016

53

(5) On receipt of the inquiry report from the officer or officers appointed under sub-section(3), if the State Government is satisfied that the University has contravened all or any of the provisions of this Act, the Rules, the Statutes or the Ordinances made thereunder or has violated any of the directions issued by it under this Act or a situation of financial mismanagement and maladministration has arisen in the University which threatens the academic standard of the University, it may appoint an administrator.

(6) The administrator appointed under sub-section (5) shall exercise all the powers and perform all the duties of the Governing Body and the Board of Management under this Act and shall administer the affairs of the University until the last batch of the students of the regular courses have completed their courses and they have been awarded with degrees, diplomas or, as the case may be, awards.

(7) After having been awarded the degrees, diplomas or, as the case may be, to the last batches of the students of the regular courses, the administrator shall make a report to that effect to the State Government.

(8) On receipt of the report under sub-section (7), the State Government shall dissolve the University and on dissolution of the University, all the assets and liabilities of the University shall vest in the sponsoring body.

MISCELLANEOUS

44. Power of the State Government to make Rules.

- (1) The State Government may, by notification in the Official Gazette, make rules for carrying out the purposes of this Act.
- (2) All rules made under this section shall be laid for not less than thirty days before the State Legislature as soon as may be after they are made and shall be subject to rescission by the State Legislature or to such modification as the State Legislature or to such modification as the State Legislature may make during the session in which they are so laid or the session immediately following.

45. Completion of courses of students.

Notwithstanding anything contained in this Act or the Regulations, any student of the constituent colleges or institutions of the University specified in the Schedule and affiliated to any University who immediately before the commencement of this Act was studying or was eligible for any examination of that University shall be permitted to complete his course in preparation therefore, and the University shall provide for the instruction, teaching, training and examination of such students, in accordance with the courses of studies of the respective University in such manner and for such period as may be prescribed.

54

झारखंडगजट(असाधारण)सोमवार,16 मई,2016

46. Power to remove difficulties.

- (1) If any difficulty arises in giving effect to the provisions of this Act, the State Government may, by order published in the Official Gazette, make provisions not inconsistent with the provisions of the provisions of this Act, as appear to it to be necessary or expedient for removing the difficulty.

Provided that no notification order under sub section (1) shall be made after the expiration of a period of three years from the commencement of this Act.

- (2) Every order made under this section shall, as soon as may be after it is made, be laid before the State Legislature.

SCHEDULE- A

- (1) Acquire not less than 10 acres of land for its main Campus, if single-domain, and 25 acres of land, if multi-domain within two years after starting the functioning of the university. An integrated campus may have certain facilities in common such as auditorium, cafeteria, hostels, etc. and hence the land requirement may vary accordingly.
- (2) Construct administrative building of at least 1000 sq. mtrs., academic building including library, lecture theatres, laboratories of at least 10000 sq. mtrs., adequate residential accommodations for teachers, guest houses, hostels which shall gradually be increased to accommodate at least 25% of the total student strength in each course within 3 years of its coming into existence. In case the University is conducting professional programmes of study, prevailing norms and standards of respective statutory body shall be applicable. Existing institutes must undertake expansion/ renovation/restructuring to meet the prescribed norms of the State Government.

झारखंड राॉयपाल के आदेश से,

ढदनेश कुमार िसंह,

ढेधानसिचव-
सह-ढविध परामशक
ढविध (ढवधान)
ढवभाग, झारखंड,
राँची।

झारखंड राजकऱय मुंणालय, राँची ढारा
ढेकाशित एवं मुंणत,

झारखंड गजट (असाधारण) 312—

50 ।